अक्टूबर - दिसम्बर 2025 CHHCHH0013

हमर चिन्हारी

छत्तीसगढ़ी तिमाही पत्रिका

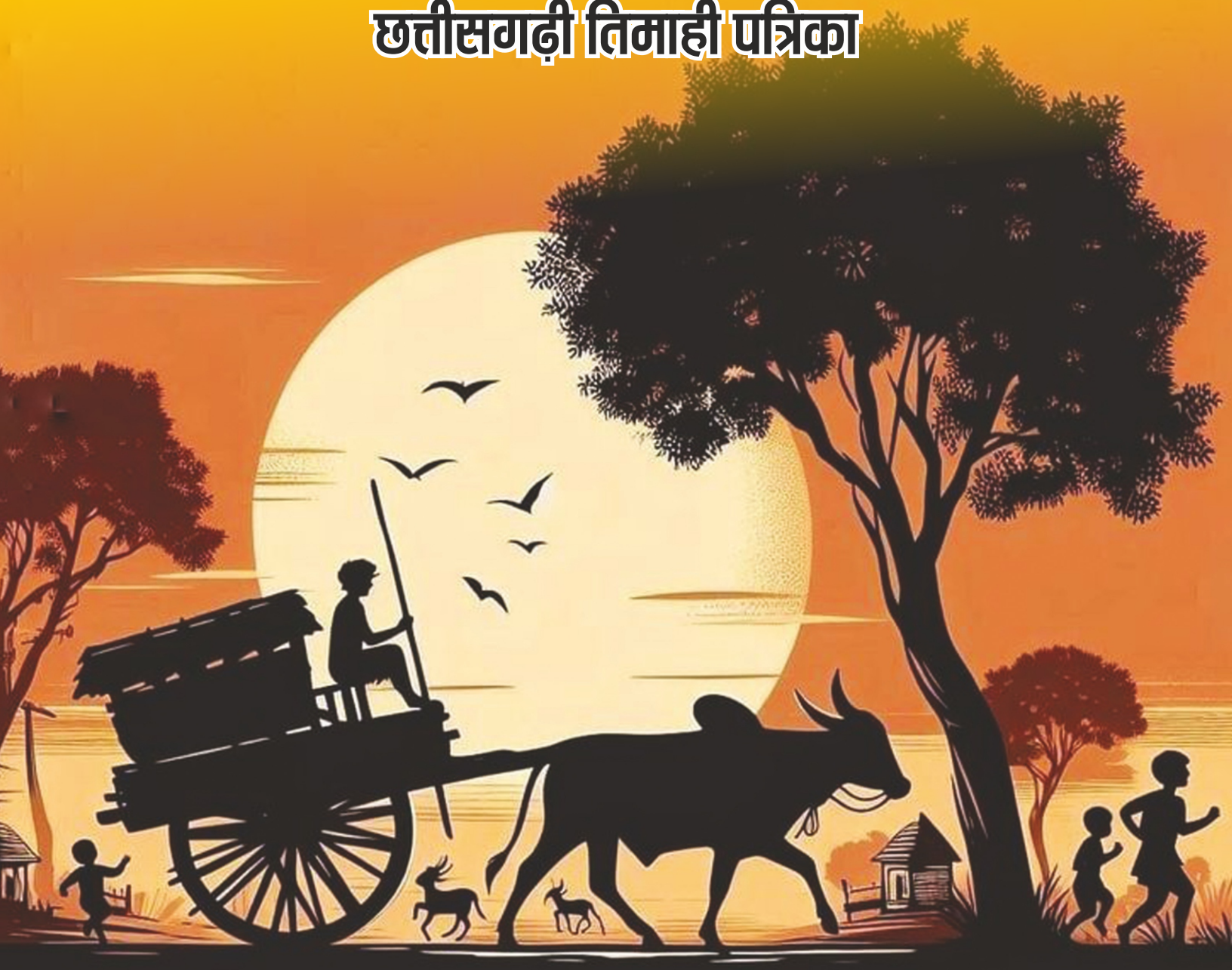

छत्तीसगढ़ - छत्तीसगढ़ी - छत्तीसगढ़िया

VIMTARA

VIMTARA

VIMTARA

VIMTARA

हमर चिन्हारी

छत्तीसगढ़ी तिमाही पत्रिका

■ नव साल - 11 ■ अंक - 4 ■ अक्टूबर-दिसम्बर 2025

संपादक
मीना रानी दुबे 'रिया'
मोबाइल नं. 8839856114

कार्यकारी संपादक
रामेश्वर शर्मा
मोबाइल नं. 9302179153

सलाहकार
डॉ. मीता अग्रवाल
अजय साहू 'अमृतांशु'
मिनेश साहू
डॉ. इन्द्रदेव यदु
गोविन्द धनगर
संतोष सोनकर 'मंडल'
अभिषेक बघेल
सुश्री ममता सोनी

स्वामी-मुद्रक-प्रकाशक

आशु प्रकाशन
पता - प्लॉट नं. 509, मिलेनियम चौक,
सुंदर नगर, रायपुर (छ.ग.)
मोबाइल : 09302179153

E-Mail
hamarchinhari@gmail.com
rameshwar518@gmail.com
website : hamarchinhari.com

कीमत
एक अंक के - 50/-
साल भर के - 600/-
जिनगी भर के - 6000/-

पत्रिका के जम्मों पद ह अवैतनिक हे। पत्रिका ह व्यवसायिक नो हे। छपे रचना हा रचनाकार के विचार आए, येमा संपादक मंडल के सहमति जरूरी नइये। कोनो विवाद होही त रायपुर के कचहरी म सुलझाये जाही।

पढ़ौ, समझौ, गुनौ, लिखौ, भेजौ

छत्तीसगढ़ी लिखैया-पढैया मन येला पढ़ौ के 'हमर चिन्हारी' तिमाही पत्रिका बर कविता कहानी, लोककथा, एकांकी, नाटक, व्यंग्य, समय के विचार, नान्हे कहनी, यात्रा कथा, रेखाचित्र संस्मरण, चुटकुला - हाना - कहावत, जनऊला, छत्तीसगढ़ी के कलेवा, खाई खजेना, साग-भाजी, दूध के खिरसा अउ दूसर मिठई जेनमा हमर छत्तीसगढ़ी अउ छत्तीसगढ़ के चिन्हार बनै, रहै ये सब्बो ऊपर छत्तीसगढ़ी म लिखके हमर पता म भेजौ।

अउ जानकारी लेना हे त कार्यालय म बात कर ले हौ।

रचना	कोन मेर
संपादकीय	2
किसान के बेटा	3
पुरखा के सुरता	4
स्वदेशी दिया	6
साड़हा देव	7
छत्तीसगढ़ के गौरव गाथा	8
पाप करे अउ गंग नहाय	10
दिन बहुरगे	11
मोबाइल के मन के बात	15
खई खजाना	16
बढ़ोना अउ झरती कोठार	17
सोहाई	18
मनोबा देवारी के तिहार	22
छत्तीसगढ़ी में समय सारणी	23
करवा चौथ चौपाई	23
सुरूहोत्ती_ईसर - गौरा जगार	24
छत्तीसगढ़ के खेल	26

सम्पादकीय

हमर चिन्हारी बर उदिम करिन

हमर चिन्हारी तिमाही पत्रिका हा ग्यारह साल पूरा होवइया हे । अब एक जनवरी दो हजार छब्बीस ले मासिक पत्रिका के रूप म निकलइया हे। ये हमर सफलता के चिन्हारी हे। येमा हमरेच मन के मिहनत नो हे, देखे जाये त जम्मो लिखइय - पढ़इया के सहयोग अउ योगदान बिन पूरा नइ हो सके। आपमन जम्मो झिन जानथव कि एक ठन लकड़ी ला कोनो तोड़ देथे। फेर उही पांच ठन लकड़ी ला एकसंघरा बांध दे जाये त वोहा टूटे नइ, काबर कि वो लकड़ी म ताकत बाढ़ जाथे अउ तोड़इया ला तोड़े बर बड़ ताकत लगाये ला पड़थे तभो ले तोड़ नइ पाये। मोर कहना हे कि जब तक ये पत्रिका म आपमन के सहयोग - योगदान रहही त हमर मन के बल बाढ़े रही अउ पूरा संपादक मंडल आगू जोर लगा के मिहनत करही। जतका सुग्घर हो सके आपेमन सेती हमर चिन्हारी पत्रिका के माध्यम ले छत्तीसगढ़ के संस्कृति - संस्कार ला अपन माई भाखा म लोगन ला जानकारी देवत रहिथन अउ आगू देवत रहिबोन। ये पत्रिका म खेती - किसानी के बारे म आलेख हे, जेमा धरती के ममहई हरियर - पिंऊरा धान ले किसान के मिहनत संग लिखाये हे।

हमर छत्तीसगढ़ के दुलरुआ बेटा कहे जाने वाले लक्ष्मण मस्तुरिया जेन ह छत्तीसगढ़ के माटी म जनमे अउ इही माटी म जिनगी पहा के दुनिया ला छोड़ के सरग सिधार गइन। कहे जाये उन पुरखा हो गइन। उनमन छत्तीसगढ़ अपन गीत के माध्यम ले लोगन ला जगाये के काम करे हें। अइसन मस्तुरिया जी के सुरता सुग्घर आलेख आपमन के आगू म हे। साड़हा देव ले संबंधित आलेख हे। छत्तीसगढ़ के गौरव गाथा ऊर आलेख हे। मोबाइल ऊपर घलो सुग्घर आलेख हे। बढ़ोना हमर छत्तीसगढ़ के धान ले संबंधित आलेख पढ़े ला मिलही। सोहई नांव के कहानी घलो बने लिखाये हवय। जेला पढ़ के कहानी के आनंद लेहू। छत्तीसगढ़ के एक ठन अइसन तिहार हे येला छत्तीसगढ़ छोड़ कहूँ दूसर जघा देखे ला नइ मिलही जेला इहेंच मनाये जाथे जेकर नांव हे सुरुहुति। येकर अलावा खाई खजाना, गहना, सिंगार मेला - मड़ई, तीरथ - बरत, कविता, नान्हे कहिनी, एकांकी नाटक, हाना सही समय - समय म पत्रिका के माध्यम ले लिखइया - पढ़इया तिर पहुँचाये उदिम करत हन। आज के समय के विसय जेन.चलत हे तेला तकनीकी म वेबसाइट ला लेके चलत हन। हमर चिन्हारी तिमाही पत्रिका आपमन के हाथ म हे। येमा के जतका आलेख कविता ला पढ़िहव अउ सराहिहव। संगे संग आपमन कोती ले कुछू सुझाव देना चाहत हव त हम ला स्वीकार हे। जेकर ले पत्रिका म सुधार कर के अउ सुग्घर बना सकन।

आप ले उम्मीद करत हन कि अभी के आये अंक पढ़ के संपादक मंडल ला अउ सुग्घर रस्ता हो त बताहूँ, जेकर ले हम ला ताकत मिलही। संगे सग मिल के पोठ बनावन अइसने आस हे ...

■ मीना रानी दुबे ' रिया '

किसान के बेटा

गांव के कच्चा गली, आंगन म बइठक, अऊ मेढ़ ले बहत जुड़ - जुड़ हवा इही म सुरुज अपन घरवाली देवकी संग खुशी-खुशी रहत रिहिस। दाई ददा परलोक चले गें रहिन, फेर चारों कोती सगा, पड़ोसी, अऊ खेत-खार के हरियाली – ये सब ओखर सहारा रिहिस। दादा हर खेत-खार छोड़ गें रहिन, जेकर ले गुजारा बढ़िया चलत रिहिस। बस सुरुज के मन म एके बात कांटा जइसन अटकत रिहिस –'गांव म बढ़िया स्कूल नइ रहिस, मय पढ़-लिख नइ पायेंव।" तेकरे सेती खेत म हाथ बंटावत-बंटावत जिनगी गुजर गिस। कछु बछर पाछू, बेटा जनम लीस – राजू। नान - नान हाथ पकड़ के ओला खेत ले जाथे, त मन म सोचथे– 'ये लइका किताब-कलम ले दोस्ती करही।" राजू पढ़े लायक होइस त सुरुज ठान लिस – 'मय अपन बेटा ला बढ़िया स्कूल म पढ़ाहूं।" गांव के मनखे मना करिन – अरे भइया, हमर लइका घलो इहेंच पढ़त हे, शहर जाके का करबे? खेत मत बेच, पाछू पछताबे।" देवकी घलो कहिस – 'इतना बड़ा कदम सोच-समझ के धर, सुरुज!'

सुरुज मन बना ले रहिस। खेत बेच दीस अऊ घर-परिवार ला शहर ले आइस। पहिली-पहिली दिन भारी मुस्किल म बितिस –नानकुन किराया के कमरा, नवा-नवा मोहल्ला, अऊ भीड़-भाड़। फेर धीरे-धीरे सब्बो जम गिस। राजू बढ़िया स्कूल म पढ़े लगिस, अऊ सुरुज अपन किराना दुकान खोल लिस – 'पढ़ाई-लिखाई नइ आय, तो का करही किराना दुकान खोल के बइठ गीस। टाइम भागत रहिस। राजू पढ़ई म बने रहिस।

वनस्पति विज्ञान पढ़के सरकारी कृषि कॉलेज म नौकरी पाइस। पहिली तनखा लेके आइस, त सुरुज कहिस –'बेटा, मोला नइ चाही। दुकान ले घर बढ़िया चलत हे, ये तंय रख ले।" राजू चुपचाप बैंक म पैसा धरत रिहिस। एक बछर पाछू, बैंक ले कर्जा लेके अऊ अपन जमा पैसा ले गांव म खेत अऊ एक छोटकुन पक्का घर खरीद लिस। एक दिन कहिस – दाई दादा अब्बड़ दिन हो गिस गांव नइ गे हन, चलव घूम के आबोन।" देवकी कहिस – 'बेटा, चाचा ला खबर दे देबे ओही घर म ठहरबो न?' राजू मुस्कुरा के कहिस – 'कहूं अपन घर म ठहरबो त?' गांव पहुंच के, गाड़ी एक नवा पक्का घर के आगू रुकिस। अंगना म सब्बो सगा, पड़ोसी, अऊ पंडित जी खड़ा रहिन। सुरुज-देवकी देखत रहिन – 'ये का होवत हे?' राजू कहिस – 'मां-पापा, ये आप मन के घर हे। कपड़ा बदल के पूजा म बइठ जाव।" दूनो के आंखी भर आइस, फेर चुपचाप पूजा म बइठ गिन। पूजा के पाछू जेवन घलो रिहिस। गांव वाले कहत रहिन – 'राजू अपन दाई-ददा के मान राख दिस।"

जब सब्बो मनखे चले गें, सुरुज पूछिस – 'बेटा, ये सब्बो काबर?' राजू अपन बाप के आंख म आंख डाल के कहिस – 'पापा, तंय मोर बर सब्बो त्याग दियेस, अपन जड़ ले कट गे। किसान के बेटा होके दुकान म बइठ गिस। जब ले मंय होस पायें हंव मोर सपना रिहिस – तुहंला अपन जड़ बापस देहूं।" थोड़े देर पाछू, दूनो ला खेत ले गिस। धान के बाली हवा मं लहरात रिहिस, मानो कहत रहिस – "अरे,हमर मालिक वापिस आ गिस!' सुरुज के आंख भर गिस। राजू मुस्कुरा के कहिस – 'हमर छत्तीसगढ़ धान के कटोरा हे। अब मंय गरब ले कहिहूं – मंय किसान के बेटा हंव। उम्दा किसिम के धान उगाबो – तेकरे सेती मंय ये पढ़ई करे हंव'। ओही घड़ी, सुरुज अऊ देवकी अपन बेटा ला कस के गले लगा लिन।

धरती के सुगंध, खेत के हरियाली, अऊ बेटा के मया – तीनों मिलके, फिर एक घांव वो मन ला अपन जड़ ले जोड़ दिस।

सुजाता चक्रवर्ती
सड्डू, रायपुर (छ.ग.)

पुरखा के सुरता

3 नवंबर -7 वीं पुण्यतिथि म विशेष

छत्तीसगढ़ी के अमर गीतकार - लक्ष्मण मस्तुरिया

मोर संग चलव रे, मोर संग चलव जी, मंय छत्तीसगढ़िया अंव, पता दे जा रे गाड़ी वाला, पड़की मैना, मंगनी म मांगे मया नइ मिलय, मन डोले रे माघ फगुनवा, घुनही बंसुरिया, सोना खान के आगी जइसे गीत के लिखइया जन कवि स्व. लक्ष्मण मस्तुरिया के 7 जून के 76 वीं जयंती हे।

मस्तुरिया जी हा अपन गीत, कविता अउ गायन के माध्यम ले छत्तीसगढ़िया मन के स्वाभिमान ला जगाइस अउ सुग्घर ढंग ले अपन हक खातिर लड़े के रद्दा बताइस, वोकर गीत म एक डहर छत्तीसगढ़ महतारी के गजब बखान हे त दूसर कोति छत्तीसगढ़वासी मन के भोला पन के वर्णन के संगे- संग किसान, मजदूर ला जगाय के उपाय हे, जिनगी भर छत्तीसगढ़िया मन के मान मर्यादा बर लड़इया अइसन क्रान्तिकारी कवि अउ गीतकार के जनम बिलासपुर जिला के मस्तुरी गाँव म 7 जून 1949 के होय रिहिन हे, शुरुआत के जिनगी गजब संघर्ष ले बीतिस, फेर वोहर राजकुमार कालेज रायपुर म शिक्षक के रूप म अपन सेवा दिस, बाद म हिंदी विभागाध्यक्ष घलो रिहिन, जउन मन ह दाउ रामचन्द्र कृत चंदैनी गोंदा ल अपन खूब मिहनत ले ऊँचाई तक पहुँचाइस वोमा लक्ष्मण मस्तुरिया ह प्रमुख रिहिन हे, लक्ष्मण मस्तुरिया ह चंदैनी गोंदा के गीत अउ गायन पक्ष ल गजब सजोर बनाइस ।

मस्तुरिया जी के लिखे अउ गाये गीत ह जनता के बीच गजब लोक प्रिय होइस । छत्तीसगढ़ के आकाशवाणी केन्द्र मन म उंकर गीत ह खूब चलिस, रायपुर दूरदर्शन म गीत प्रसारित होइस, उंकर गीत ल सुन के मन ह खुशी से झूमे लागय त कतको गीत ह छत्तीसगढ़िया मन के स्वाभिमान ल जगाइस, वोकर गीत के खूब आडियो अउ वीडियो रूप बनिस, पान ठेला, होटल के संगे संग बर बिहाव, छट्ठी, कोनो भी सार्वजनिक कार्यक्रम म मस्तुरिया जी के गीत रंग झाझर मंता देय. वोकर गीत ल सभा -संगोष्ठी म बजा के - गा के जनता म जोश भरे जाथे. स्कूल / कॉलेज के वार्षिक समारोह म मस्तुरिया के गीत ह कार्यक्रम म जान डाल देथे ।

लक्ष्मण मस्तुरिया के बारे म डॉ. बल्देव जी ह लिखथे –"लक्ष्मण मस्तुरिया हमर अग्रज कवि हरि ठाकुर जइसन वीर अउ ऋंगार, क्रांति अउ पीरित के अद्वितीय गायक आय, कहूँ - कहूँ उन बहुत करीब हे, लेकिन शैली के थोर बहुत अन्तर तो रहिबेच करही." छत्तीसगढ़वासी मन के स्वाभिमान ल वो कइसे जगाइस वोकर उदाहरण देखव –

सोन उगाथौं माटी खाथौ । मान ल देके हांसी पाथौ ।।
खेती खार संग मोर मितानी । घाम मयारु हितवा पानी ।।
मोर इही जिनगानी मंय नगरिया अंव ग किसन के बड़े भइया हलधरिया अंव रे झन कह मोला लेढ़वा डोमी करिया अंव ग सिधा म सिधा नइ तो डोमी करिया अंव र मैं छत्तीसगढ़िया अंव रे

मोर संग चलव गीत म वोहर छत्तीसगढ़िया मन ल जगाय के काम करथे, बिपत संग जूझे बर कहिथे -

मोर संग चलव रे मोर संग चलव जी,
वो गिरे थके हपटे मन अउ परे डरे मनखे मन,
मोर संग चलव रे, मोर संग चलव ग
बिपत संग जूझे बर भाई मंय बाना बांधे हंव ।
सरग ल पिरथी म ला देहू प्रन अइसे ठाने हंव ।।
मोर सुमता के सरग निसेनी जुरमिल सबो चढ़व रे.
मोर संग चलव रे, मोर संग चलव जी

मस्तुरिया जी के ऋंगार गीत ल सुन के मन ह मयूर जइसे नाचे ल लगथे. अंतस ह मगन हो जाथे.

पता दे जा ले जा गाड़ी वाला रे तोर नाम के तोर गाँव के तोर काम के पता दे जा ....
जियत जागत रहिबे बयरी भेजबे कभू ले चिठिया
बिना बोले भेद खोले रोये जाने अजाने पीरीतिया
बिन बरसे उमड़े घुमड़े जीव मया के बयरी बदरिया

पता दे जा रे गाड़ी वाला ।
अइसने "पड़की मैना "गीत ल सुनके हिरदे ल गजब उछाह लागथे.
वारे मोर पड़की मैना, तोर कजरेली नैना मिरगिन कस रेंगना तोरे नैना
मारे वो चोंखी बान, हाय रे तोर नैना ।
वियोग ऋंगार रस मा मस्तुरिया के गीत ल सुन के मया करइया मन के आंसू ह टपक जाथे ।
काल के अवइया कइसे आज ले नइ आये तोला का होगे,
रस्ता नइ दिखे बइरी तोर का कहूं रस्ता म काहीं अनहोनी होगे
का कहूं छोड़ मया ल संगवारी जोगी होगे
घेरी बेरी डेरी आंखी कइसे फरकाये तोला का होगे,
टीपकी टीपकी आंसू गिरे मोर ...

अइसने अउ उदाहरण प्रस्तुत हे..

सरी रतिहा पहागे तैं नइ आये रे
तोला घेरी बेरी बइरी मंय सपनायेंव रे
अइसन का होगे काम
भूलिगै देह ल परान
का तो महि हौं अभागिन
अपने होगे आन
आ आ नींद बइरी आंखी ले उड़ि जाय रे

शोषण करइया मन ल मस्तुरिया जी खूब ललकारय .
हम तो लूट गयेन सरकार तुंहर भरे बीच दरबार
खुल्लम -खुल्ला राज म तुंहर अहा अत्याचार
रइहो रइहो खबरदार
हाय विधाता दिन -दिन बाढै देस म अत्याचारी
परमिट वाले डाकू भइगे जन सेवक सरकारी
सुतरी सुतरी छांद फांद के लूटै पारी -पारी
हांस रे लछमन करम ठठा नइ रोवे म उबार
हम तो लूट गयेन सरकार तुंहरे भरे बीच दरबार

मस्तुरिया जी ह "सोनाखान के आगी" म शहीद वीर नारायण सिंह के वीरता ल गजब सुग्घर ढंग ले प्रस्तुत करे हवय .

फेर सुरता आगे उही प्रन के ।
फरकिस भुजा बरन ललियाय ।।
आंखी जले लगिस लक लक।
कटरै दांत , बदन अटियाय !!
नहीं नहीं संगी ये मरना तो ।
कायर अउ मन हारे के ।।
मोर जिनगी मोर परजा खातिर।
जे मोला मुखिया माने हे ।।

जमींदार मंय सोना खान के ।
सोना उपजै मोर माटी म ।।
जिहां के भुंईधर भूख मरत हे ।
आग बरै मोर छाता म ।।

रचनायें -
मस्तुरिया के रचना म हमू बेटा भुइंया के (काव्य संग्रह),
चंदैनी गोंदा में लक्ष्मण मस्तुरिया के गीत, छत्तीसगढ़ के माटी (छत्तीसगढ़ दर्शन), सोना खान के आगी, माटी कहे कुम्हार से (निबंध संग्रह) अउ घुनही बंसुरिया (गीत संकलन) प्रमुख हे।
मस्तुरिया जी ह सन् 2000 मा बने मोर छइंहा भुइंया, मंजरी सहित कतको छत्तीसगढ़ी फिलिम बर गीत लिखे के सँगे सँग गायन करिस, कछु बेरा तक लोकासुर मासिक पत्रिका के संपादन घलो करीस ।

सम्मान – छत्तीसगढ़िया जन जागरण के अग्रदूत मस्तुरिया जी ल राज्य सरकार द्वारा जउन सम्मान मिलना रिहिस वो नइ मिल पइस. आंचलिक साहित्य म गजब लिखइया साहित्यकार मन ला शासन द्वारा पं. सुंदर लाल शर्मा सम्मान देय जाथे. वहू नइ देय गिस. जबकि मस्तुरिया जी के कई ठन गीत ह छत्तीसगढ़ के स्वभिमान गीत हरे. पृथक छत्तीसगढ़ राज्य आंदोलन के समय मस्तुरिया के गीत मोर सँग चलव रे, मयँ छत्तीसगढ़िया अवँ ह शंखनाद के काम करिस, पर मस्तुरिया जी ह जनता के प्यार ल सबसे बड़े सम्मान माने । एक चैनल म इंटरव्यू देत खानि वोहा पूरा दम खम के साथ येला बोले रिहिस । ये इंटर व्यू देत समय सुप्रसिद्ध गीतकार जनाब मीर अली मीर जी घलो उंकर संग रिहिस ।

हमर छत्तीसगढ़ के कतको साहित्यिक अउ सांस्कृतिक संस्था मन हा मस्तुरिया जी ल सम्मानित करिस. येमा छत्तीसगढ़ी काव्य भूषण, लोक स्वर, विशेष प्रतिभा सम्मान, स्व. ठाकुर प्यारे लाल सिंह सम्मान, छत्तीसगढ़ी विभूषण, सृजन सम्मान, रामचंद्र देशमुख बहुमत सम्मान ।
रेडियो म मस्तुरिया जी के गीत ल ननपन ले सुनत हन, गिने चुने जउन गीतकार, गायक मन जनमानस म अपन अलग प्रभाव छोड़िस

वोमा लक्ष्मण मस्तुरिया प्रमुख रीहिन हे ।

मस्तुरिया जी के कवि सम्मेलन म अब्बड़ मांग रहय. छत्तीसगढ़ के सबो प्रमुख शहर अउ कतको गाँव म वोहा काव्य पाठ करे हे.वोकर लोक प्रियता ल देख के भीड़ भाड़ ल रोके बर वोला आखिरी डहर काव्य पाठ कराय जाय.मेहा लक्ष्मण मस्तुरिहा ल लखोली, राजनांदगांव म आयोजित कवि सम्मेलन म काव्य पाठ करत सुने रहेंव. छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग के कार्यक्रम म मस्तुरिया जी ले भेंट होय ।

मस्तुरिया जी ह 20 जनवरी 1974 म नई दिल्ली के लालकिले म गणतंत्र दिवस के अवसर म आयोजित राष्ट्रीय कवि सम्मेलन म काव्य पाठ करिस. वोहा देश के नामी कवि/गीतकार गोपाल दास नीरज, बाल कवि बैरागी, इन्द्रजीत सिंह तुलसी, रामावतार त्यागी, रमानाथ अवस्थी मन संग अपन प्रस्तुति दिस. वो समय मस्तुरिया जी सिरिफ 25 बछर के रिहिन हे।येहर छत्तीसगढ़ म वोकर लोक प्रियता के सबले बड़का उदाहरण हे .

छत्तीसगढ़ के ये रतन बेटा ह 3 नवंबर 2018 म परम लोक चले गे. श्रद्धेय मस्तुरिया जी ल सत् सत् नमन हे।

ओमप्रकाश साहू 'अंकुर'
सुरगी, राजनांदगांव (छ.ग.)

स्वदेशी दिया

कातिक बर मोर रचना

पुराना समें माटी के दिया ल घला गिनती के खरीदें । पहिली के मनखे देखावा मा जादा खरचा नइ करना चाहे।सुरुती तिहार के दिन अपन घर के कनौजी मा चंउर पिसान के दिया अउ फरा मनमाने अकन उसने।नान्हे -नान्हे दिया मा थोर-थोर तेल अउ छोटकुन बाती ।कांचा दिया अंगना मा जलावें। उसनाय दिया ल अंगना-दुवारी, अरछी-परछी, कोठा-कुरिया, दरवाजा-मोहाटी, फुला-पठेरा, ढेंकी-जांता, इहां तक बइला के पीठ मा जलत दिया ल, रख देवें । जब एक संघरा सब दिया मन जल उठे तब रिगबिग-सिगबिग दिया बरे। कातिक अमावस के सरभर अंधियारी रात। नानचुन दिया से सब जगा अंजोर हो जात।सरग धरती मा उतर जात। नानचुन दियना के बगबग ले अंजोर। आज सुरुति तिहार, दिया बार के सब करत हें खुशी के इजहार। आज के दिन दीपदान घला करधें। अपन परोसी घर के तुलसी चौरा मा दिया मंढ़ा के आथेंअउ गांव के गौरा चौरा मा एक दिया मंढ़ाके आथें। पुराना बुजरुक सियान मन कांहय-माटी के दिया मा जादा तेल लागथे अउ उसनाय दिया मा थोरकुन तेल। खर्चा मा बचत।उसनाय दिया बुझा जावे वोला टप ले मुंह मा खाले बड़ तेलहा स्वादिष्ट। आज के दिन ल लक्ष्मी पूजा घला कहिंथे। धान-पान घर मा आथे। लक्ष्मीबाई केआरती मेंहा उसनाय दिया बार के करत सुरुति तिहार मनावत राहवं।

मकसुदन राम साहू 'बरीवाला'
मोबाइल - 9165088076

साड़हा देव

मातर-जगार अउ यादव

हमर छत्तीसगढ के गवईहाँ संसकिरती मा यदुवंशीय, यादव, ठेठवार, पहाटिया, अहिर, राऊत समुदाय के गाँव बेवस्था मा ऊँचहा इसथान हे। किसान, ठाकुर के दमदार, गऊ रक्छक साथी नम्बर वन राऊत होथे। जेन सुभाव ले सिधवा, मिलनसार, गाँव बिधान के झंडा ल अपन हाथ मा थामके गाँव के संसकिरति ल बारो महीना आगु बढ़ाथे।

गाँव बस्ती के गौठान म बिराजे साड़हा देव ला किसान मन राऊत ल हरेली अउ देवारी (गोबरधन) के दिन सेवा अरजी करे बर पोगरी सऊँप देथें। गाँव के साड़हा देव भगवान के असली पुजारी राऊत मन होथे, जेन दूध - दही कंद- मूल, फर के भोग लगाथे।

फेर अहू मा एकठन बिस्कुटक देखे जावत हे, अइसे काकर बुध ला मानके साड़हा देव ल तिरियाके दुसर देव ला खड़े करे जावत हे , बिचार करे के बात हे। एमन पहिली भटकगे रिहीन या अब भटकत हे..? एके जगा एके बिधान के दूठक देवता कइसे...?

मातर प्रथा, परम्परा_ मा = पालक, माता। तर = तरना, पार होना। अपन पालक के करजा ले मुकती पाना, सुखी होए के कामना करना। मातर परम्परा के अगुवा राऊत मन आय, किसान ए परम्परा के बिकास म भरपुर सहियोग करथें। समाज मा दू बिधान रइथे एक भितरौंधी, दुसर बाहिरी। जइसे घर भीतर कुल देव, पीढ़ी पूजा होथे अउ जंवारा जग जाहिर। मातर देवारी के बादेच होथे। मातर के तइयारी राऊत, पहाटिया मन करथे। मातर संकल्पित होथे _हर साल, तीन सला, या जब जब कुल देवी देवता सताही तब। बिना राऊत ,पहाटिया के गाँव मा मातर नइ मनावय ।

ए दिन चरवाहा समुदाय अपन कुल देवी - देवता मनके पूजा करथे। अपन देवी - देवता के आगू मा गोरइया चघथे। सब अपन देवता के आगू मा झुपथे _जवारा मा देवता चघथे। ईसर -गौरा मा डड़ईय्या, कोठा म गोरईया, राऊत कांसा चढ़के दोहा पारथे।

मातर परब_ एला मनाए के पहिली पहाटिया गाँव के ठाकुर मनला सूचित कर देय जाथे।

गौठान मा खैर रुख के 'फुड़हर ' देवता (लोकदेव, वनरक्षक) ला सुग्घर सजाके परतिक सवरूप रखथें। तिहाँ लइका- सियान मिलके सेवा, अरजी- बिनती करथें । पशुधन गाय - बइल के पूजा करथे। बिहिनिया ले रऊताईन मन गौठान पहुचके तइयारी करथें। बरदी के बीच कुम्हड़ा ल ढुलोके गाय के गोड़ मा फोरवाथे। तहाँ ले महिलामन इही ला सब्जी बनाथे। संगमा खीर,भात, साग तको बनाथें। गाँव भरके सकलाये मनखें मनला इही ला बाद मा परसाद सवरुप बाँटथे।

दरसक मनके बीच म पुरुषमन _रंगीन कपड़ा पहिरे, मोर पंख, कउड़ी पहिने, तेंदु लउठी धरके पारम्परिक दोहा पारके दफड़ा, गुदुम, टीमकी, मोहरी के धुन मा बिधुन होके नाँचथें। कुछ मन अजीब-अजीब अखाड़ा तको देखाथे।

ये मातर तिहार मा गउ पालक यादव मनके कहीं ना कहीं गाँव व पशु सुरक्छा के संगे- संग घर परिवार, समाज उन्नति के मंगल कामना समाए हे। एमा सार बात कहे जाए ता समरसता, आपसी भाईचारा, लोक संसकिरती सामाजिक एकता के भाव झलकथे।

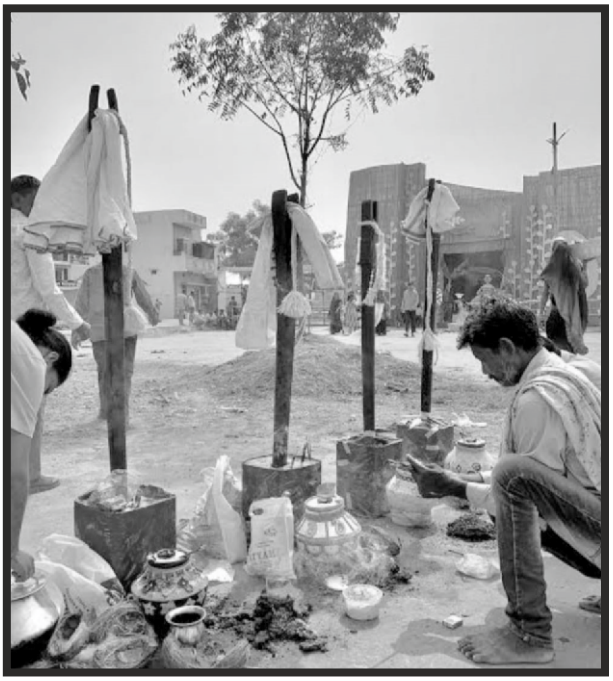

मदन मंडावी
ढारा, डोंगरगढ़, राजनांदगांव (छ.ग.)

छत्तीसगढ़ के गौरव गाथा अमर राहय

एक नवंबर हमर छत्तीसगढ़िया मन बर गरब अउ गौरव के दिन आय, ये दिन छतीसगढ़ के नाव इतिहास मा सुनहरा अक्षर ले अंकित हवय I काबर इही दिन अपन नवा स्वरूप मा सबके दुलौरिन सबके मयारू हमर छतीसगढ़ महतारी सन 2000 मा मध्यप्रदेश ले अलग होके भारत के 26 वां राज्य बनिस I अउ ओकर राजधानी रायपुर ह बनिस, ओकर सेती ये दिन हम सब बर आत्मसम्मान,गौरव अउ विकास के नवा शुरुवात के नवा रद्दा बनिस । संस्कृति, संस्कार, सभ्यता ला हार मा पिरोवत आज हमन छतीसगढ़ राज बने के खुशी मा रजत जयंती मनावत हन ।

देखत हन नवा सपना
घर बन होही उजियारा
डगर डगर मा गूँजही
जय हो जय छत्तीसगढ़ के नारा

सिरतोन मा इहाँ के लोक संस्कृति, सभ्यता, गीत संगीत, लोक नृत्य, सरल सहज गुरतुर बोली लोगन के हिय मा रच बस जाथे । हरियर हरियर धरती धानी, बन जंगल पहाड़, कलकल करत नदिया नरवा झरना, डीह डोंगरी पठार प्रकृति के अद्भुत सुंघरई ल अपन अचरा मा समेटे अकुत खनिज संपदा ला अपन गर्भ मा धारण करे हे I तेकर सेती हमर छतीसगढ़ महतारी ल रत्नगर्भा तको कहिथे, तभो ले विकास के रद्दा मा हमर महतारी कोसों दुरिहा पिछवागे रिहिस, जेकर पीरा कई घव हमन अनुभव करे हन । अइसे लगय हमर राज के भूगोल म कोन्हों अस्तित्व नइये, फेर प्रदेश के सुजानिक लइका मन महतारी के पीरा ला समझिन अउ आवाज उठाय बर धरिन । ठाकुर प्यारेलाल सिंह, डाक्टर खूबचंद बघेल, पंडित सुन्दरलाल शर्मा, डाक्टर चंदूलाल चन्द्राकर अउ कई झन जागरूक सियान मन अंतस के आरो ल उपर केंद्र तक पहुचाइन । अउ एक दिन, वो बेरा आइस जेन दिन छतीसगढ़ महतारी के गोहार ल राष्ट्र के शासक मन ल सुनाय गिन अउ तय होइस वो तारिख एक नवंबर 2000 जब हमर छतीसगढ़ महतारी अपन अलग राज के रूप मा आकार लिन ।

तब जम्मों छत्तीसगढ़िया मन के चेहरा खुशी ले खिलगे, आत्मसम्मान अउ आत्मगौरव के मुकुट सजगे सबो मनखे के मुँह ले निकलिस जय हो, जय हो, छतीसगढ़ मइया, मध्यप्रदेश ले अलग होके प्राकृतिक संपदा अउ धन धान्य ले भरे नवा छत्तीसगढ़ राज के भौगोलिक स्थिति के बात करथन तब येकर लंबाई उत्तर ले दक्षिण ७०० किलोमीटर,पूर्व ले पश्चिम ४३५ किलोमीटर राज के सीमा सात ठन राज्य ले घेराय हे, उत्तर मा उत्तरप्रदेश, उत्तर पूर्व मा झारखंड,दक्षिण पूर्व मा उड़ीसा, उत्तर पश्चिम मा मध्यप्रदेश, पश्चिम मा महाराष्ट्र, हे । येकर सुंघरई के का कहँव मैकल पहाड़, रामगिरी, बैलाडीला, लाफागढ़, देवगढ़, अबुझमाड़, कुल्झारी, सिहावा, मैनपाट अउ बस्तर के पठार ला मुड़ मा बोहे मुसकावत हे । महानदी, शिवनाथ, अरपा, पैरी, खारून, जोक, मनियारी, हसदेव, इन्द्रावती, लीलागर, रेणुका, मांड, ईब, केलो, डंकिनी शंखिनी, बाघ, सोंढुर, दूध नदी के जलधार पग मा पाँव पखारत हे । सबके भरण पोषण सिंचित करत इहाँ के माटी बड़ उपजाऊ तभे तो धान के कटोरा के ताज मुड़ म सजे हे । गंगरेल, माडमसिल्ली, तांदुला, बांगो, खरखरा, दुधावा बाँध महतारी के प्यास बुझावत हे । खनिज संपदा के बात करथन त कोयला, हीरा, सोना, बाक्सइट, लौह अयस्क, डोलोमाइट, चूनापत्थर, टिन अयस्क, अभ्रक प्रचुर मात्रा मा मिलथे । रायपुर जिला के देवभोग मा हीरा के भंडार खोजे गे हे, अउ सफलता पूर्वक उत्खनन

करे जात हे । दल्ली राजहरा के बाद लौह अयस्क के विशाल भंडार रावघाट मा मिले , जिहां उत्खनन के काम चलत हे अतेक खनिज संपदा होय के बाद छत्तीसगढ़ ह पिछवाय रिहिस हे, फेर राज बने के बाद येकर दशा अउ दिशा मा बदलाव आइस । छत्तीसगढ़ के पावन भुइयाँ के कोंनहा कोंनहा मा श्रध्दा भक्ति के धार बोहावत हे, चारों मुड़ा देवी माँ विराजे हे जिहाँ जन-जन के आस्था के दीया जलत हे । डोंगरगढ़ के बमलेश्वरी माई, राजिम जेला छत्तीसगढ़ के तीर्थ प्रयाग जिहाँ भगवान राजीवलोचन विराजे हे महानदी पैरी सोंढुर के संगम जिहां हर साल पुन्नी मेला लगथे अउ महीनो तक चलथे । जेला आज कुंभ मेला तको कहिथे, संत गुरुघासीदास के जन्मस्थली गिरौदपुरी, शिवरीनारायण के त्रिवेणी संगम, रतनपुर के महामाया, सिरपुर के लक्ष्मण मंदिर, भोरमदेव, तुरतुरिया, सोमनाथ, खरौद के लखेश्वर महादेव, दंतेवाड़ा के दंतेश्वरी माई, नगरगाँव के बोहरही दाई, बंजारी माई, गंगरेल तीर अंगार मोती कई ठन मंदिर छतीसगढ़ के धार्मिक, एतिहासिक अउ सांस्कृतिक पहचान हवय जेन हा आस्था के संगे संग कला अउ इतिहास के गौरव गाथा के उदाहरण हरे । गिरौदपुरी, शिवरीनारायण, सिरपुर, तुरतुरिया, मल्हार, खरौद, खल्लारी, दंतेश्वरी, बमलाई, चंद्रहासिनी, महामाई, बोहरही दाई के महिमा भारी छत्तीसगढ़ के नामकरण ल देखथन त कई ठन प्रमाण मिलथे, बाल्मिकी रामायण मा दंडकारन्य अउ दक्षिण कोशल के रूप मा उल्लेख । राज्य के उत्तरी भाग उत्तरप्रदेश के अवध अउ दक्षिण कोशल राज के दक्षिण भाग ल कोशल राज कहें जाथे, राजा दशरथ के रानी कौशिल्या देवी दक्षिण कोशल के राजकुमारी रिहिन, कालीदास के रघुवंश मा घलो कोशल के वर्णन मिलथे । इतिहासकार राय बहादुर हीरा लाल के अनुसार छतीसगढ़ के नाँव पहिली चेदि वंश के शासन के सेती चेदिसगढ़ कहावय । बाद मा ओकर अपभ्रंश अउ छत्तीस किला या गढ़ होय के सेती छत्तीसगढ़ होगे, रायपुर जिला के गजेटियर के अनुसार कलचुरी शासन काल मा शिवनाथ नदी के दक्षिण भाग मा 18 जिला अउ शिवनाथ नदी के उत्तरी भाग माने रतनपुर राज मा 18 जिला रिहिस आज भी हम पुरातत्विक एश्वर्य ल कई रूप मा देखथन । कहूँ जीर्ण रूप कहूँ शिलालेख, मूर्तिचित्र अउ कई प्रकार के उत्खनन शोध के रूप मा ।

राज बने के बाद सरकार पुरातत्व अउ संस्कृति विभाग ल मजबूत बनइस, अउ पुरखा मन ले मिले धरोहर मंदिर, किला के मरम्मत साफ़ सफाई रंग रोगन कर पर्यटन सुविधा ल बढ़ावा देवत हे । इहाँ के लोकगीत लोकनृत्य हर तीज तिहार मा खुशी के रंग भर देथे, ढोल मादर के थाप उछाह ल दुगुना कर देथे I

सुआ, करमा, ददरिया, पंथी, पंडवानी, भरथरी, राउत नाचा, डंडा राष्ट्रीय अंतरास्ट्रीय स्तर मा पहुँच गे हवय, राज बने के बाद लोककला के संरक्षण बर संस्कृति विभाग बढ़वार मा जुटे हे । येला शैक्षणिक पाठ्यक्रम मा तको शामिल करे गे हवय तेकर सेती तो ये लोक संगीत अउ नृत्य हा हमर मन के आत्मा मा रचे बसे हे । अउ उही कारण लोक संगीत लोक गीत, लोक नृत्य ल छत्तीसगढ़िया मन के आत्मा कहे जाथे ।

छतीसगढ़ के लोकजीवन खेती किसानी प्रकृति अउ देवता के पूजा पाठ संग अंतस के गहिर ले जुड़े हे तिहार बार मा प्रकृति के सम्मान बर अउ देवता ल आभार करत उछाह उमंग सन गाँव समाज के मनखे के मेल मिलाप अपनापन अउ एकजुटता के भाव ल दिखाथे।

महर महर महका के संगी, राज के मान बढ़ाबो
देश दुनिया मा जश बगरे, सपना पुरखा के सिरजाबो।

छतीसगढ़ राज बने के बाद इहाँ शिक्षा के विस्तार मा बड़ तेजी आइस शिक्षा अउ स्वास्थ्य के विकास ल कोनों भी राज के रीड़ के हड्डी माने जाथे । जब राज बनिस तब बीमारु राज के रूप मा एकर गिनती होत रिहिस हे, फेर आज 25 बरस के यात्रा मा अतका विकास करत हे अब बीमारु नहीं विकसित राज के रूप मा पहचान बनगे । आज जब हम शिक्षा कोती ल देखथन त मेडिकल कालेज, इंजीनियरिग कालेज, आई आई टी, एम्स, फार्मेसी, नर्सिंग, ला कालेज हे । पढ़ाई के क्षेत्र मा परचम लहरात हे । अउ स्वास्थ्य कोती ल देखन त पूरा राज्य मा स्वास्थ्य के पहिया चरमराय कस लागय, फेर आज विश्व स्तरीय अस्पताल सुविधा ले भरे मिलत हे, रायपुर मा एम्स, मेकाहारा अउ जगह जगह के जिला अस्पताल लोगन बर जीवन रेखा के रूप मा काम करत हे ।

नवा बिहान हमर नवा पहचान सही मा 1 नवंबर 2000 सिर्फ राज के जनभावना के जीत नोहय, बल्कि सब बर नवा उजास नवा अवसर लेके आय हे । आधी आबादी महिला मन के हावय फेर पहिली राजनीति मा पुरूष मन के दबदबा राहय, महिला मन के भागेदारी नहीं के बराबर राहय फेर आज महिला मन कंधा ले कंधा मिला के राजनीति मा तको आगे आवत हे, पंचायत मा महिला आरक्षण के आय ले महिला मन ल मौका मिलिस । अउ पंच सरपंच ले के जनपद, जिला, विधान परिषद मा आके अपन जिम्मेवारी, भागेदारी निभावत हे महिला संगठन, स्व सहायता समूह अइसे कोनों क्षेत्र नइये जेमे महिला मन नइ होही । सरकार तको महिला मन ला आगू बढ़ाय बर कई ठन योजना चलावत हे, महिला सशक्तिकरण, महिला कोष, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ जइसन योजना ला ओकर मन के आत्मविश्वास अउ आत्मनिर्भर बनाय बर चलावत हे । राजनीति मा महिला मन के भागेदारी नवा सोच नवा दिशा नवा समाज के कहानी गढ़त हे, कहिथे न कोनों भी राज के विकास तब होथे जब महिला मन के भागेदारी होथे ।

लड़बो अपन संस्कृति भाखा बोली के बढ़वार बर।
नवा बिहान नवा सुराज छत्तीसगढ़िया मन के अधिकार बर।।

छतीसगढ़ी हमर महतारी भाखा आय तइहाँ समे के गोठ करन तभो इहाँ कथा कन्थिली,गीत लोक जीवन मा रचे बसे रिहिस । इहाँ के लोगन मन जादा पढ़े लिखे नइ रिहिन तभो अपन साहित्य गाथा गीत ला एक पीढ़ी ले दूसर पीढ़ी तक सहेजे के बूता करत रिहिस । फेर नवा राज बने ले साहित्य ल मानों नवजीवन, राज्य सरकार छतीसगढ़ी ल राजभाषा के दर्जा देके हमर भाखा के बढ़वार बर उदिम करिस । छतीसगढ़ी साहित्य के कोठी ल भरे के उदिम होवत हे, समाचार पत्र पत्रिका कवि मंच,गोष्ठी अउ कई माध्यम ले छतीसगढ़ी साहित्य ल बढ़ावा मिलत हे । अउ इहाँ के साहित्यकार मन छतीसगढ़ी भाखा ल पोठ करे के उदिम मा दिन रात लगे हें, अइसे लागे ले धर ले हे माटी मा लुकाय अउ नँदाय गीत मन फेर पीका फूटत हे, नवा पीढ़ी के साहित्यकार मन नव कविता गीत के संगे संग सामजिक मुद्दा, समसामयिक विषय मा लेख अउ छंद मा रचना करत हें ।

विकास के गति सरलग चलने वाला हरे, अउ ये विकास के गाथा गढ़े बर हम ला अउ जादा ले जादा उदिम करे ले लगही । एखर बर सद्भाव अउ भाईचारा ले कदम ले कदम मिला के संकल्प लेके जुरमिल के चले ले पड़ही । शिक्षा कला,संस्कृति ल ऊँच अगास मा पहुँचाय ले पड़ही अपन भाखा बोली परंपरा के बढ़वार करत अवइया पीढ़ी ल राज्य स्थापना दिवस के महत्व अउ गौरव गाथा ल बताय ले पढ़ही । छत्तीसगढ़ महतारी के अचरा मा सुखदा के धार बोहावय, विकास अउ समृद्धि के गाथा गढ़य छत्तीसगढ़ महतारी के गौरव अमर राहय ।

सुमता के रद्दा मा चलबो हम सब इहाँ के निवासी
जाँगर पेर कमाबो जुरमिल खाके चटनी बासी
दुराचारी हा डर के भागय तानन अइसे छाती
हीत मीत ल देते राहन संगी मया दया के पाती।

संगीता वर्मा
भिलाई अवधपुरी

पाप करे अउ गंग नहाय

(दोहा छंद)

पाप करे अउ डूब के, जाके गंग नहाय।
पुण्य कहाँ ले पाय गा, अपने मन भरमाय।।

अइसे कइसे रीत हे, येला कोन बनाय।
पाप करे अउ पुण्य बर, चार धाम गा जाय।।

का नहाय ले भागही, करें हवँय जे पाप।
उदिम हरे संतुष्टि बर, स्वांग रचाथव आप।।

लेखा जोखा तोर हे, सबो ईश के पास।
ढकोसला फिर काय बर, करथव लीला रास।।

जान बूझ गलती करे, धरे दिखावा राग।
पाप पुण्य के फेर मा, भपके मन मा आग।।

सत के रद्दा पुण्य ये, झूठ लबारी पाप।
दया धरम करले बने, लेके प्रभु के जाप।।

बाहर गुरतुर मीठ हे, मन भीतर हे पाप।
खुदे मनन कर देख ले, होथे तब संताप।।

भ्रामक सब संसार मा,खुदे बनाये रीत।
अपने दोष छुपाय बर, करथे काम अनीत।।

विजेन्द्र कुमार वर्मा
नगरगांव

दिन बहुरगे

(कहानी)

चौपाल म बइठे फिरतू बबा के सोर लेवइया अब कोनो नई दिखय। दिखही भी कहाँ ? खेती- खार वाले मन बिहनिया ले निकल जाथे अउ आत ले साँझ हो जथे। थके मांदे लोगन घर म लगे डी डी डायरेक्ट देखत सुत जथे। बिहनिया उठिस तांहले फेर उही के उही बेरा। गाँव के किशोर लइका मन स्कूल ले आइस तहाँ मोबाइल के इंस्ट्राग्राम,यू ट्यूब अउ वॉट्सएप म मगन हवय। कोरोना काल म ऑनलाइन पढ़ई का होइस लइका मन के हाथ म मोबाइल आगे जइसे बेंदरा के हाथ मा उस्तुरा। अब इन पढ़ई - लिखई ल छोड़ जतका फालतू बुता हे सब मोबाईल म करत हवय। अब खेल म ककरो धियान नइ हे। गाँव के तीर मा महानदी के सुग्घर बोहावत धार म तउरे बर ककरो करा समय नइ हे। फिरतू बबा तीन पीढ़ी के साक्षी हवय। एक समय रहिस कि आवत- जावत बबा ल कोनो बीड़ी दे दे, कोनो केवटिन मुर्रा चना त कोनो ढीमरा के बने ताजा जलेबी। गाँव भर मया करय बबा ला।

समय के चक्का कहाँ रुकथे,घूमिस गाँव के दुर्भाग शुरू होगे। गाँव के बाहिर म दारु लुका चोरी बेंचावय, पियईया मन उही डाहर ढरका के आवय। कम से गाँव के मरजाद बने रहिस फेर अब तो कोचिया मन गाँव भीतरी खुसर के बेचे ल धर ले हवय। अतेक सुघर गाँव ला नशा अपन चपेट म ले ले हवय। फागू के पान ठेला गाँव भर म फेमस जिहाँ पान के बीड़ा के संग सुख- दुःख के गोठ होवय फेर अब उहाँ पान कम डिस्पोजल अउ पानी पाउच के बिक्री जादा होथे । साँझ होइस तहाँ मंदहा मन के बकर-बकर शुरू। अब तो साफ-सुथरा मनखे मन जाय ल घलो कतराथे । फिरतू बबा गाँव के अइसन हालत देख के हताश हे।

पहली चुनाव के बखत पाँच बछर म दारु के धार बोहावय फेर अब तो ये रोजिना के बात होगे, काबर राजनीति के मइलहा नाली

अब गाँव के हर गली, हर घर, हर समाज अउ हर परिवार मा खुसरगे। नाली बज बजावत अउ बस्सावत हे। अइसे लगत हे मानो इहाँ के युवा मन के नस मा खून के जघा दारु बहत हवय। कोचिया मन अवैध दारु बेंच के गाँव ला नशा मा बोर दे हवय।

खेत बेच के नवा मोटर साइकिल ले रहिस मनोज हा। पइसा का आइस छानही म होरा भूंजे लगिस। पीना-खाना अउ जुआ-चीती। सियान मन कतको समझाइन फेर नइ चेतिस। एक दिन नशा मा धुत्त मोटरसाइकिल ला ऑय-बांय चलात पेड़ म जा के झपागे। अइसे गिरिस के सीधा जमलोक पहुंचगे। मनोज दू लइका के बाप रहिस अब वोकर बाई उपर तो पहाड़ टूटगे। ना जाने कइसे करके पालही दू झन लइका ला। शीतला दाई के कोरा मा बसे अतेक सुग्घर गाँव ल जाने कोन भूतही के नजर लगगे।

ऑसों चुनाव म गाँव के युवा राजेश हा जीत के आय हवय। मन म कुछ नवा करे के जुनून हावय फेर दरुहा मन के इलाज पहली करे ल परही इही सोच के राजेश एक दिन पंचायत के बइठक बलाइस जेमा सबो सियान, पंच, युवा अउ खासकर महिला मन ला बलाइस। बइठका शुरु होय के पहिलीच कुछ पियक्कड़ मन फुसफुसाए लगिस - नेवरिया साधु के कुला म जटा तोरो साध बुता जहय राजेश । सब सकलाय के बाद राजेश टी आई ला फोन करिस। गाँव वाले आपस म सोचें ल धर लिन कि पुलिस वाला ल काबर बलावत हे..? थोरिक देर में टी आई साहेब घलो आगे। सब झन खुसुर-फुसुर करे लागिस।

टी आई मनोज के दूर-दूर तक नाव रहिस काबर के उन अपराधी मन ल तरीका से सबक सिखाय, एक घाव कहूं कोनो अपराधी ला भीतरिया दिस त समझ जाव कि वोकर फैसला अदालतें म होतिस। कोनो नेता ल नइ घेपत रहिस येकर सेती 6 महिना ले जादा कोनो थाना म नई टिकत रहिस फेर ओकर परवाह मनोज कभू नइ करिस। अपराधी मन ओकर नाव सुन के थर-थर कांपय । अब बइठका शुरू होइस।

टी आई कहिस कि देखव भाई हो नशापान के रोकथाम अकेला प्रशासन ह नइ कर सकय येमा आम जनता के सहयोग जरुरी हवय। मैं आज ये गाँव म महिला कमांडो के गठन करत हँव। एक-एक टीम मा नौ-नौ झन महिला रइही। इन सबला आई कार्ड बना के देहूँ। सब महिला बर एक डंडा अऊ सीटी के व्यवस्था पंचायत हा करही । ये सबो महिला मन पुलिस असन काम करही इँकर उपर कोनों भी प्रकार के बिपत्ती आही ता मोला तुरते खबर करहू। पुलिस के पूरा सहयोग इनला मिलही। पुलिस हा पूरा गाँव ल सहयोग करही ये बात के भरोसा मैं देवत हँव । जतका अवैध दारु के कोचिया हवय इन गाँव - गाँव ल बरबाद करत हवय इन ल ठिकाना लगाना जरुरी हवय । गाँव वाले मन ताली बजाके टी आई के गोठ के समर्थन करिन।

फेर एक जरुरी बात जो मैं कहना चाहत हँव वो ये कि - कोनो भी नशेड़ी ला जेल म बंद कर देना ये समस्या के हल नोहय। कुछ समय म उन छूट जाही अउ फेर पीये ल धर लेही। ये समस्या ल जड़ ले खतम करना हवय तब लोगन म जागरूकता लाना जरुरी हवय। जब लोगन जागरूक हो जाही तब खुदे होके नशा करे ल छोड़ दीही। येकर उपाय सोचना तुँहर काम आय। अब ये तुँहर उपर हे कि लोगन ला कइसे जागरुक करना हवय। अतका कहिके टी आई चल दिस।

टीआई के जाय के बाद राजेश हा रामू कका ल कहथे - आगे का करना हवय तेला तुही मन बताव कका। रामू कका जेकर नाव गाँव के संग तीर तखार मा घलो पंचैत मा बड़ सम्मान से ले जाथे कहिन - देखव भाई हो गाँव के समस्या के हल गाँव म ही हो जाय येकर ले बने बात का होही.? नशा के कारण कोनो भी भाई ल कोर्ट कचहरी अउ थाना के झंझट झन लागय, कुछ अइसन जुगत निकाले ला परही ताकि सांपो मर जाय अउ लाठी घलो झन टूटय।

कुछ गुनान करे के बाद रामू कका कहिस - ये गाँव म जेन भी शराब के नशा करत या नशा के हालत म पाय जाही वोला डॉड़े जाही। अइसने जेन दारु बेंचत पाये जाही उनला घलो डॉड़ परही ,काबर पीनेवाला अउ बेचने वाला दूने दोषी हावय येकर सेती दूनो ल पाँच पाँच हजार के डॉड़े परही। रामू कका के गोठ सुन के कुछ पंच मन बुदबुदाए लगिस।

रामू कका कहिथे का बात हे जी ? कोनो ल कोई आपत्ति हवय का? अतका सुन पंच मन चेपचेपागे। एक झिन पंच कहथे डॉड़ तो ठीक हवय कका फेर ये डॉड़ के पइसा पंचायत म रइही कि कोनो अपन खाता में जमा करही ? तब सरपंच राजेश कहिथे -ये पैसा न तो पंचायत म रहय और न ककरो खाता म जमा होय ये पइसा हमर महिला कमांडो के जेन समूह इनला पकड़ही तेन समूह ला ये डॉड़ के राशि इनाम सरुप दे जाही।

रामू कका - तय तो मोर मुँह के बात ल कहिदे राजेश। सरपंच राजेश के गोठ सुनके महिला मन ताली बजाइन,उनला अइसे लागिस मानो पहिले बेर उँकर काम के सम्मान करे जात हे नइते नारी परानी ला का मिलथे केवल दुत्कार के सिवा ?

अउ जेन डॉड़ के पइसा नइ दे पाही तेकर का होही कका....? एक झन पंच टांट मारत सवाल करिस। रामू कका कहिथे - वोकरो इलाज हावय जी। जेन डॉड़ के राशि नई दे पाही वोहा शीतला तरिया म १५ दिन तक रोजिना जाके पचरी के साफ-सफ़ाई करही।

कचरा अउ दतवन के चीरी ल सकेलही। आखिरी दिन पंचायत मा किरिया ख़ाही कि अब दुबारा अइसन काम नइ करय।

फेर का उही दिन ले महिला कमांडो मन अपन बुता मा लगगे। का दिन अउ का रात महिला कमांडो मन नौ-नौ के समूह बना के ओसरी पारी डिप्टी दे लागिन। हाथ मा डंडा, अउ एक सिटी संग मा किसान टार्च, रिकार्डिंग अउ फोटो खींचे बर मोबाइल ले लैस हो के चले लगिन। आज पहिली बार महिला मन ल अपन स्वतंत्रतता उपर गरब होत रहिस। चूल्हा चौका ले कभू नइ उबरइया महिला मन आज कमांडो के भूमिका म हवय। साँझ के बाद घर ले बाहिर नइ निकलना मुश्किल रहय तेन आज रात बिकाल ले घूम घूम के डिप्टी बजात हे।

येती बर पियईया मन मा हाहाकार मातगे.. काबर कि महिला कमांडो मन घूमत रहय। पकड़इस मतलब पाँच हजार के डॉड़ मा उंकर आधा महिना के कमई चल देहय फेर बाकी महिना भर के गुजारा कइसे होही? या फेर १५ दिन तरिया के सफाई जेन इज्जत के सवाल हे।

इही सोंच के कई झन पीयेच बर बंद करे लागिन। कभू कभार वाले मन तो छोड़िच दिन। फेर आदतन रोज पियईया मन तो हलकान रहय। महिला कमांडो मन पारी-पारी रात के ग्यारा के बजत ले डिप्टी बजात रहय। कमांडो मन के सीटी के आवाज सुनते साट पियइया मन के सिट्टी-पीट्टी गुम हो जाय।

एक दिन रात के सावित्री अपन महिला कमांडो संग मरघट्टी डहर निकलगे। रात के ठउका 10 बजे रहय। मरघट्टी डहर ले खुसुर - फुसुर के आवाज सुन के सावित्री के टीम चौकन्ना होगे। महिला कमांडो के किसान टार्च के लाइट जइसने परिस भागो-भागो होगे। पियक्कड़ मन दारु- चखना ल उही मेर छोड़ सब पटाटोर होगे। कोनो हाथ तो नइ आइस फेर महिला कमांडो के दहशत पियइया मन उपर छागे रहय।

गाँव मा रात के 12 बजत ले पुलिस के सीटी कस महिला कमांडो मन के सीटी परत रहय। अइसे तइसे 1 महिना होगे कोनो मेर ले नशाखोरी के खबर नइ मिलत रहिस अब गॉव भर के मनखे मन खुश हवय। गांव के गौठान, गली,मोहल्ला मा अवैध दारु बेचावत रहिस तेन बंद होगे। जगह-जगह दुरुहा मन पी खा के हुल्लड़ करय तेन बंद होगे। आय दिन लड़ई झगरा होय तेमा लगाम लगे लागिस। गांव के महिला मन सबले जादा खुश रहे लगिन काबर सबले जादा तकलीफ तो महिलाच मन ला होथे। सब डहर के मार महिलाच मन उपर परथे। ऐती सरपंच के प्रशंसा गांव भर होये लागिस। गाँव ले बाहिर दूसर गाँव मा घलो सरपंच के काम के प्रशंसा सुनई दे लगिस।

साँझती के बेरा सुनीता के टीम ला खबर मिलथे कि दारु कोचिया अउ पियक्कड़ मन रात के आठ बजे असन कन्हार तरिया मा सकलाथे अउ पीथे काबर उहाँ रात के कोनो नइ जाय। सुनीता इमन ल पकड़े खातिर प्लान बनाय लगिस। उन अपन महिला कमांडो के संग 1 घंटा पहिलीच तरिया के खाल्हे मा सपट गिन। महिला कमांडो ले अनजान दरुहा मन तरिया डहर आइन अउ महफिल सजाये लगिन। बस फेर का हे सुनीता अपन टीम के संग दरुहा मन उपर टूट परिन। कमांडो ला देख के भागो- भागो मातगे। सुनीता कहिथे बिमला टार्च मार मैं इकर वीडियो बनात हव अउ बाकी मन इन ला घेरव भागे झन पाये। महिला कमांडो मन ले घेराय दरुहा मन पछिना-पछिना होगे रहय, कोनो येती भागत हे कोनो वोती फेर सुनीता के मोबाईल मा तो पूरा रिकार्ड होगे रहय।

दूसर दिन पचांयत बइठिस, दारु पियत अउ बेचत पकड़ाय जम्मो झिन ला डाँड़े गिस। उँकर ले किरिया घलो लेवाय गिस के आज ले हमन न तो दारू पीयन अउ न तो बेचन। डाँड़ के पैसा ला सुनीता ल दे गिस। ये पइसा ला सुनीता अपन स्वसहायता समूह म लगा दिस ताकि समूह म पैसा के कमी झन रहय।

दारु कोचिया अउ पीने वाला मन म अतका भय समागे कि पीना अउ बेचना दूनों बंद होगे। फेर कहिथे ना चोर चोरी ले जाय हेरा-फेरी ले नइ जाय। कोचिया अउ दरुहा मन अब धोबिन तरिया ल अड्डा बनाय धर लिन। महिला कमांडो मन के नाक तो कुकुर कस रहय, सुंघियात उहों धमकगे। कुल मिलाके गाँव बाहिर पाँच सौ मीटर तक के दायरा मन चारो डहर नशा पानी पूरा बंद होगे।

सरपंच के शराबबंदी ले चिढ़े दारु के कोचिया मन अब कइसनो करके भंग करे के जुगाड बनाय लगिन। सरपंच के परिवार के कोनो सदस्य ल फंसा के बदनाम करे के साजिश रचे लगिन।

एक दिन सरपंच के सग कका के बेटा ल बहला फुसला के कोचिया मन कहिन देख रमेश तोर भाई सरपंच बने हे अउ तैं आज तक पार्टी घलो नइ दे हस का कंजूस आदमी हस यार...?

रमेश कहिथे- येहू कोई बात ये यार, तोला पार्टी चाही ना ले ले पार्टी, कहाँ करना हे बता ? धोबिन तरिया म बइठबो अउ का।

रात के आठ बजे सबो सकलाइन। रमेश डहर ले समोसा,भजिया, जलेबी, कोल्डड्रिंक आदि के पूरा इंतजाम रहय वोतके बेर कोचिया मन दारु के अद्धि अउ पव्वा धर के पहुंचगे। रमेश भड़कगे - ये तो बने बात नइ हे यार जब तुमन जानत हव कि गाँव मा शराब बंदी हावय तब तुमन दारु धर के काबर आय हव..?

कोचिया कहिथे - अरे जान दे ना रमेश एकाध पैक मार लेबों त काय फरक पर जाही। वइसे भी ये मेर कोनो देखइया नइहे। अउ फेर तोर भाई सरपंच हावय तोला का के डर। तोर कोन का बिगाड़ लेही..?

रमेश कहिथे - ये अच्छा बात नोहय। फेर कोचिया मन तो पूरा प्लान म रहय। जोर जबरजस्ती कर के रमेश ल घलो पियाच दिन। अब वो मेर सबो झन दारु अउ चखना मा रमगे। पार्टी के खबर तो महिला कमांडो ल लगगे रहय। चलत पार्टी म महिला कमांडो धमकगे। फेर का पूछना सब कोनो दारु चखना ल छोड़-छाड़ के कूद-काद के येती ओती भागे लगिन। ककरो माड़ी छोलावत हे त ककरो हाथ। सावित्री के टीम हा रमेश संग दू झन ल पकड़ लिस।

रमेश तैं...? येती तोर भाई नशाबंदी के सुग्घर काम करत हावय अउ तैं नशापान करत हस तोला कुछु लागथे कि नहीं ..? सावित्री कहिस।

रमेश गिड़गिड़ाए लागिस मोला छोड़ दे भउजी मैं ये कोचिया मन के भभकनी म आगेंव फेर कभू दारु ल हाथ नइ लगांव।

सावित्री कहिस- देख रमेश पूरा टीम हा तोला नशा मा देख डारे हे। अब तो येकर फैसला पंचायते मा होही..

दूसर दिन साँझ के पंचायत मा बइठका होइस। आज पंचायत मा भारी भीड़ रहय काबर के सरपंच के भाई के फैसला होना रहय। येती बर कानाफूसी होय लगिस कि सही फैसला होही कि नहीं। कोनो कहत हे कहां ले होही देखबे सरपंच अपन भाईच डहर बोलही वोला डाँड़ बोड़ी नइ परय। लेना आज येकर परीक्षा हवय येहा सही म शराबबंदी चाहत होही तब डाँड़ही नइते नई डाँड़य

येती कोचिया अउ वोला संग देने वाला मन भीतरे भीतर मगन होत रहय कि आज ले शराबबंदी के भूत सरपंच के मुड़ी ले उतर जही अउ काली ले फेर दारु के धंधा फुन्नाय लगही। रामू कका अपन ठीहा मा बइठिस अउ कहिस - देख रमेश आज जेन तोर शिकायत आय हे वो अक्षम्य हे। न्याय तो सब बर एक हवय। चाहे गाँव के कोनो मनखे होय। तोला डाँड़ तो परबे करही। अउ ते किरिया खा कि आज के बाद तैं अइसन काम नइ करस।

रामू कका कहिथे - कइसे राजेश तोला फइसला म कोनो आपत्ति हे का ...? सरपंच कहिस - तै कभू गलत फइसला कर ही नइ सकस कका। जेन पंचायत के नियम हे वो सब बर लागू होही। चाहे मोर सग भाई ही काबर न हो पंचायत के फइसला सब ला माने परही।

राजेश के जवाब सुन के पंचायत म बइथे सब झन राजेश के प्रशंसा करे लगिन कि सरपंच होय त अइसने नियाव रास्ता म रेंगने वाला। सरपंच के भाई वोकर साथी अउ कोचिया मन ल पांच-पाँच हजार के डॉड़ परिस अउ फेर कभू अइसन काम नइ करन कहिके किरिया खाइन।

अब तो तीर तख़ार के संग दूरिहा के गाँव म घलो सरपंच के प्रशंसा फैले लागिस। आने गाँव के मन घलो अब अपन गाँव म शराबबंदी के योजना बनाय लागिन अउ राजेश ला बलाय लगिन। सरपंच आन गाँव म जाके महिला कमांडो के गठन करे ल धर लिस ।

शराबबंदी होय आज 11 महिना बीतगे हवय गाँव शराब मुक्त होगे हवय। सब डहर सुख शांति हवय। राजेश अपन किसानी मा मगन हे तभे मोबाइल म काल आथे - हैलो राजेश जी बोल रहे है ?

राजेश- हव राजेश बोलत हँव।

मैं जिला मुख्यालय से एस.पी.नरेश मिश्रा बोल रहा हूं। आपने गांव में शराबबंदी करके बहुत बड़ा मिशाल कायम किया है । पुलिस प्रशासन आपका सम्मान करना चाहती है ?

राजेश - ये शराब बंदी मा मोर अकेला के योगदान नइहे सर, येमा मोर गाँव के दीदी, बहिनी, बेटी अउ बहू मन के महिला कमांडो के योगदान अउ मेहनत हावय। तब येकर आधा हकदार तो उहू मन हे। यदि आप सम्मान करना चाहत हव तो पूरा टीम के करव नहीं त मोला क्षमा करहू।

एस पी मिश्रा जी कहिन - हमें आप पर गर्व है राजेश जी कि आपने अपनी पूरी टीम को इसका श्रेय दिया है। फिक्र मत करिए आपका सम्मान आपकी पूरी महिला कमांडो के साथ किया जायेगा।

एक बड़े कार्यक्रम मा राजेश अउ महिला कमांडो मन के सम्मान होइस। आज गाँव के सबो झन खुश हे कि हमर गाँव नशामुक्त होगे हे। सब ले जादा खुश तो फिरतू बबा हवय कि वो कर जुन्ना दिन बहुरगे..।

अजय अमृतांशु
भाटापारा

मोबाइल के मन के बात

कालि रतिहा के बात आय। कोनो लईका के करलई,रोवई के सेती मोर नींद ह टूट गे।बने जड़कल्ला के दिन रहिस,ते पाय के मेंहर बने मोठ रजई ल ओड़ के सुतत रहेवं।फेर कोन लईका अतेक करलई मार-मार के रोवत हे,देखना चाही,मानवता के धरम ल निभाना चाही,अइसनेहे महान सोंच ल ले के रजई ल फेंक देवं।

दसना ले पांव ल जइसे ही भुइयां म रखेवं त देखेवं मोर मोबाइल ह फोंय-फोंय रोवत हे।मय सोचेंव, लईका के रोवई के रिंगटोन ल मोर मोबाईल म कोनो सेट कर देहे हे का ?

मोबाईल ल उठायं त वोहर अउ जोर-जोर से रोए लागिस।जेला देख के मोर चिंता बाढ़ गिस।मेंहर ओला सहलावत पूछेवं- का होगे मोबाइल बेटा ? काबर अतेक सुबक-सुबक के रोवत हस ?

मोर सवाल ल सुन के मोबाइल ह मरकनहा गोल्लर कस बमकगे।अउ मोर हाथ ल बिजली करेंट कस झटकत बोलिस- जादा मया दुलार झन देखा।तूमन के दोहरा चरित्तर ल अब में हर जान डारे हवं।लबारी मारे म तो मनखे मन ह भारी उस्ताद होथव।अउ जबले हमन तुमन के हाथ म आए हन तब ले हमर आड़ म लबारी मारे के तुमन के गति ह राकेट कस बाढ़गे हावय।

वोखर बात ल सुनके मोर दिमाग खराब हो गिस। महूं ह खखवाए कुकुर कस गुर्रावत वोला बोलेवं-देख रे मोबाईल,मुहूं सम्हाल के बात कर।तोला लाज नी लागत हे,मोरे पोसे पाले बिलई मोहि ल गुर्रावत हस।अरे हमन का झूठ बोलथन बता तो !

मोला भड़कत देख के मोबाईल ह पहिली तो सकपका गिस फेर हिम्मत करके बोलिस- सुनना चाहत हस न त ले सुन।काखरो फोन आथे त तुमन ह रहिथव घर म अउ मोबाईल म कहि देथो कि अभी तो अस्पताल म हवं।रहिथव दुरूग म अउ कहिथव रइपुर म हवं। लबारी तुमन बोलथव अउ माध्यम हम मोबाईल ल बना लेथव।

वाह रे मनखे हो,एक तो झूठ बोलथो उपर ले मोबाईल ल जबरिया पाप के भागीदार बना देथव। निरदोस मोबाईल ह झूठ ल सहारा देके फंस जाथे।ओखर आत्मा ह अइसन अनित काम बर मोबाईल ल धिक्कारथे तको। इही ल कहिथें- गुर खाय गंगू पीटान खाय टुकना।

मोबाइल के बमकई ल देख के मोर पसीना छूटे लागिस। मेंहर वोला समझाय के कोसिस करेंव-अरे बेटा मोबाइल, आज के जमाना ह लबारी के जमाना आय। नेता डाक्टर,वकील,साधू, सेठ,साहूकार मन तो लबारी के नींव म ठाढ़े हावयं।जमाना संग चले खातिर थोर बहुत तो झूठ बोलेच ल परथे।

एमा काहिं बुराई नई हे।आज के जमाना म राजा हरीसचंद बनके नई रहे जा सकय बेटा। ते पाय के थोर बहुत माने 'दार म नून' कस झूठ बोलई ह जरूरी होगे हावय।

देखत तो होबे, झूठ बोल बोल के लोगन मंतरी-संतरी बनत जाथें। झूठे-झूठ के तेल म अपन फरजी काम-काज के बरा ल चूरो-चूरो के बड़े बड़े ईनाम पा जावत। छदमश्री मन ह पदमश्री के मान ल पा जावत हें।

देख बेटा मोबाईल मोर बस चलतीस न त मेंहर तो सादा झूठ बोलना सिखाए के यूनिवरसिटी खोल लेतेवं। झूठ बोले म माहिर नोनी बाबू मन ल 'मास्टर आफ झूठ आर्ट', पीएचडी के डिगरी बांटतेवं।जेकर बल म वोमन ला सबो जगह अपने आप मान सम्मान मिले लागतिस।आजकल इही सब तो होवत .....

भईगे भईगे बंद कर तोर बकवास ल कहत मोबाईल ह मोर बोलती बंद कर दिस। फेर बोलिस -तोर जानत म अइसन लंदर फंदर काम होवत हो ही।फेर मोर बात ल कान लगा के सुन- तोर बकर बकर के मारे मोर चारजिंग सिरावत हे।अब मोला जल्दी चारजिंग म लगा दे,नइ त मोर संगे संग तोरो बोलती बंद हो जाही।

मोबाईल ल लकर धकर चारचिंग म लगाएवं अउ फेर,झूठ लबारी के महिमा के बखान करत बोलेवं- मोबाईल बेटा,आजकल सच बात ल लोगन झूठ समझथें,अउ झूठ बात ल सच। इही पाय के झूठ के नींव म खड़े दुनिया के जादा झन मनखे मन कामयाब दिखथें। झूठ बोलईया मनखे के जुबान म चासनी घोराय रहिथे। वोमन ह जानथें - 'बानी ऐसी बोलिए मन का आपा खोय,औरन को शीतल करें आपहुं शीतल होय।' मीठा बानी म झूठ बोल बोल के छप्पन छूरी चलईया मनखे के दूनों हाथ म लाडू रहिथे।

मोबाईल ह मोर गोठ ल सुनके तिलमिला गिस अउ गुर्रावत बोलिस - भुलागे हस,पहिली जमाना के सियान मन कहयं 'झूठ बोलना पाप हे,गड्ढा म सांप हे,उही तोर बाप हे।' एकर मरम आय कि झूठ बोलबे त पाप के फल ल भोगना परही। अउ पाप के डबरा म बोजाना परही,जिहां बइठे सांप माने कानून-कायदा ह तोला सुधारे

खातिर बाप बनके तोला सजा दिही।

मोबाइल के ए बात ह मोर अतंस ल झकझोर दिस।मेंहर संसो म परे-परे मोबाईल के महिमा ल समझेवं अउ वोला बोलेवं- मोबाइल बेटा,तोर मन के पीरा ह मोर अंतस के अंधराए आंखी म नवा जोत ल जला दिस हे। सही बात बताए हस कि फालतू के गोठ बात कर-करके मनखे मन ह मोबाइल के महत्तम ल खतम कर देहे हें।

परन करत हवं कि आज ले सही जरूरत के बेरा म भर तोर उपयोग करहूं। झूठ फरेब के काम ले दूरिहा रहत रहत तहूं ल अइसन काम ले दूरिहा राखहूं। मोबाइल बेटा,तयं सही म सरवन कुमार कस सुख दुख के संगवारी अस। जन जन के पीरा ल उंखर नता-गोता तक पहुंचा के सबके पीरा हरे के काम ल करथस।तोर दुरूपयोग करके मनखे मन ह अपने गोड़ म टंगिया मारे कस काम करत हें।

मोर बात ल सुनके मोबाईल के पीरा हवा म उड़ागे।वोहर मुचमुचावत अपन रिंगटोन म गाए लागिस -सजन रे झूठ मत बोलो खुदा के पास जाना है। न हाथी है न घोड़ा है वहां पैदल ही जाना है।

विजय मिश्रा 'अमित'
अग्रोहा कालोनी, रायपुर
मो. 9893123310

खई - खजाना
तसमई बनाए के विधि

आवश्यक जिनिस – 5 लीटर दूध के तसमई बनाय बर
चाउर **बासमती टुकड़ी** या कोनो भी पांच मुठा, दूध गाढ़ा वाला 5 लीटर, देसी घी दो छोटे चम्मच, काजू , बादाम, चिरौंजी - छोटे - छोटे कटाय। शक्कर -1 किलो ।

बनाये के तरीका –

1. दूध ल बड़े गंजी म डार के चुलहा बार के चुरोये बर मढ़ा लेव ।
2. बासमती चावल के टुकड़ी ल पानी म बने धो के छान के रख लेथन, अउ सफफा कपड़ा म फैला देंन ,
3. अब गैस चूल्हा म कराही मढ़ा के थोरकिन घी लगभग 2 छोटे चम्मच म चाउर ल हल्का हल्का भूंज लेवव ।
4. दूध चुर जही तहां ये भुजाएं चाउर ल दूध में डार लेव ,दूध ला अच्छा धीमा धीमा आंच मां चुरन दव बीच-बीच में चम्मच चलावत राहय ताकि दूध गंजी के तली म झन ब इठे ।
5. 5 किलो दूध हर चुरत चुरत अउट के 4 किलो असन हो जाहय त ओमा चा उर घलो बने चुर गे रही तहान ओमा । काजू बादाम चिरौंजी नान-नान कटाये हे तेरा डाल देव।
6. ये तसम ई बनाए म 3 से 4 घंटा या ओखर ले ज्यादा समे लग सकथे, जतका दूध हर चुरही मतलब गाढ़ा होही ओतके खीर ह मिठाही।
7. अब आखरी म शक्कर ल डार के 2 से 3 मिनट तक बस चुरोना हे, अब हमर तसमई बन के तियार हे।

मीना रानी दुबे
सुन्दर नगर, रायपुर

बढ़ोना अउ झरती कोठार

खेत खलिहान अउ ओमा बोये फसल किसान मनके जिनगी के एक अभिन्न अंग होथे, तभे तो किसान मन अपन खेत खलिहान अउ धान पान ला देवता बरोबर पूजथे अउ बेरा बेरा मा बरोबर मान गउन करत, फसल के बढ़वार के संग सुख समृद्धि के कामना करथें। अक्ति तिहार बर टेड़गी डोली मा ठाकुरदैया ले लाए धान ला बोके, बोनी मुहतुर करे के परम्परा हे, ता धान लुए के बेरा जब आखरी होने वाला रथे ता बढ़ोना करे के नेंग हे। बढ़ोना माने फसल काटे के बूता खतम होना। किसान मन धान के फसल जब पूरा कटने वाला रथे, ता एक कोंटा मा थोरिक धान ला छोड़ देथें अउ छोड़े धान मेर जम्मों लुवइया मनके हँसिया ला मढ़ाके, नरियर फूल-दूबी चढ़ाके, हूम-धूप जलाके, मिठाई नही ते कोनो पकवान भोग लगाके धरती दाई के पूजा करथें। घर वाले किसान संग वो बेरा मा जतका धान लुवइया आय रथें, सब बढ़ोना नेंग मा शामिल होथें अउ माटी महतारी ला बढ़िया फसल देय बर नमन, जोहार करथें, अउ आने वाले साल मा अउ बढ़िया फसल के वर मांगथें। बढ़ोना के पकवान/मिठाई अउ प्रसादी ला खेत मा काम करइया मनके संगे संग घर लाके पारा परोसी ला घलो बाँटे जाथें, जेखर ले सब जान जाथें कि धान बढ़गे हे, लुए के बूता झरगे हे। बढ़ोना के नेंग लगभग सबे किसान मन करथें। आज भले हार्वेस्टर के जमाना हे, तभो बढ़ोना होथेच।

बढ़ोना कस एक नेंग अउ होथे, जेला झरती कोठार कथन। खेत के जम्मों धान पान ला कोठार मा लाके सिधोये जाथे। माने खेत के धान ला भारा बांधके, गाड़ा मा जोर जोर के कोठार मा लाके, खरही गांजे जाथे अउ पैर डार के मिंजे ओसाये के बाद कोठी मा नाप के धरे जाथे। खेत ले कोठार आये बड़का बड़का धान के खरही देखत मन गदगद हो जथे। पहली किसान मन धान के खरही ला खेत के जम्मों काम बूता झरराये के बाद धीरे धीरे महीना भर मा मिंजे, ओसाये अउ कोठी मा धरे। काबर कि खेती किसानी ही उंखर मुख्य कार्य रहय। आज थ्रेसर हार्वेस्टर के जमाना मा हप्ता भर मा लुवई मिंजई झर जावत हे, तभो मनखें वो बचे समय ला ठलहा गंवा देवत हे। झरती कोठार माने धान पान मिंजे धरे के काम झर जाना।

धान के बड़का बड़का खरही, पैरावट, पैर, रास आदि के का कहना? येला जेन देखे होही तिही ओखर सुखद अनुभव कर पाही। रास धान के मिंजे ओसाये के बाद कोठर के एक कोंटा मा धान ला बढ़िया गांज के बनाये जाथे। कलारी, सूपा, मोखला कांटा, चुरी पाठ, गोंदा फूल, काठा, चरिहा, कलारी आदि रास मेर सजे रथे ता देखके अइसे लगथे, सँउहत अन्न के देवी पधारे हे। रास के धान ला काठा मा नाप नाप के चरिहा मा भरके कोठी या फेर बोरा मा भरे जाथे। नापत बेरा हर खांड़ी मा एक मुठा धान गिने बर किसान मा रखथें, अउ बीस खांड़ी होय के बाद एक गाड़ा के कूड़हा मड़ाथें। नापतोल के बात करन ता बीस काठा माने एक खाँड़ी, अउ बीस खाँड़ी माने एक गाड़ा। वइसने चार पैली के एक काठा होथे। आजकल अइसन काठा, पैली, चरिहा, मा नापजोख कमती होवत जावत हे। काठा मा जब धान नापथे ता पहली ला एक ना गिनके राम कथे, वइसने बीस काठा होय के बाद, भगवान के नाम लेवत एक कूड़हा रखथें। किसान मन धरती कोठार करथें ता सबो धान ला कोठी मा नइ रखें, कुछ ला बोरा चुंगड़ी मा भरके रखथें, काबर कि पौनी पसारी(ठाकुर, बैगा, चरवाहा, कोतवाल आदि सब के जेवर), दान दक्षिणा देय बर घलो लगथे। धान मिंजे के बाद घरो घर भाट भटरी मन दान पुण्य के आस मा आथे, अउ धान के धान लगभग सब किसान खुशी खुशी करथें। आज तो धान ला मंगइया मन घलो मुँह फेरत पैसा माँगथें। झरती कोठार के खुशी मा किसान मन घर मा बढ़िया बढ़िया पकवान अउ रोटी-पीठा राधथें अउ पारा परोसी मन ला खवाथें। कोमहड़ा पाग, सेवई, तसमई अउ कतरा झरती कोठार मा बनबेच करथे। कोठार अउ कोठी संग धान के रास मा हूम देके गुरहा चीला चढ़ाए जाथे। रास जब नपा जाथे ता ओमा के मोखला कांटा अउ चूड़ी पाठ ला बोइर के छोटे पेड़(बोर्झरी) मा चढ़ाये के नेंग हे। झरती कोठार खरीफ फसल धान, कोदो आदि मुख्य खाद्यान फसल के बूता ला झर्राये के बाद करे जाथे। तेखर बाद किसान मन नगदी फसल के रूप मा खेत मा अरसी, सरसो, मसूर, चना, गहूं के खेती करथें। चौमासा भर के महीनत, छत्तीसगढ़ जेखर नाम से जाने जाथे, वो धान के बड़ सुघर नेंग आय बढ़ोना अउ झरती कोठार के।

जीतेन्द्र वर्मा 'खेरझिटिया'
बाल्को, कोरबा (छ.ग.)

सोहाई

बिहनिया ले उठगे आज ओ नोनी हा। काबर नइ उठही ? आज दुसरइया दिन आवय। जम्मो जीव-जिनावर भक्तिभाव मा बुड़े रहिथे। पहिली दिन जोरा-जारी, हियाव-नियाव, स्वागत-सत्कार मा निकल जाथे। बच्छर मा एक बेरा आथे कुवार नवराति हा।.. अउ संग मा आथे सौहत देबी हा। जोत-जेवारा, डांग- डोरी धजा -पताका .. । रिकम-रिकम के बरन-बईगा- गुनिया, चेला-चंगुरी, डीही-डोंगर, देवी-देवता के, दरसन-परसन, सेवा-सटका करे बर। ओला तो आने गाँव जाना हावय आज। अपन कला देखाय बर , आदिवासी लोक नृत्य देखाये बर। ओखर दल बेरा परब मा नाचके, झुमके जम्मो दुख पीरा अउ जिनगी के थकासी ला बिसरा लेथे अपन गाँव मा। फेर आने गाँव के नेवता मा कला देखाये बर घला चल देथे।

जम्मो लोकनृत्य मा भगवान आराध्य, इष्टदेव के महिमा, ओखर जस अउ ओला उछाह करे के गोठ रहिथे । चाहे करमा, सरहुल, गौरानृत्य, मांदरी, डंडा, रहस, पंथी, गेड़ी, राउत नृत्य होवय। लोकनृत्य घला भक्ति के माध्यम आवय । शहर के ओन्हा ओढ़ईया कस्बा अउ बड़का शहर मा ये गाँव महुआटोला के नाव के सोर अब्बड़ हावय ।

मन मंजूर अउ गोड़ मिरगा के होगे हे आज ओखर । भिनसरहा भईसा मुँधियार रिहिस तभो ले कतका बुता कर डारिस। गाय बछरू के जतन पानी । गोबर-कचरा, बरतन-बासा .. जम्मो बुता । बम्बर बारके परछी ला करिया मा, अउ लाल घेरू माटी मा कोठ ला खुंटिया डारिस । उपका डारिस काली के बाचे खोचे ला ..। माटी के घर खपरा वाला अउ छानी के टिप मा बइठे सोनचिरई ..। सिरतोन कुम्हार हा अभिन लान के मड़हा देय हावय अइसे लागत हावय। बढ़ई अभिन घर ला बनाये होही। सरई अउ बीजा लकड़ी के काड़-कगड़ी, खिड़की-कपाट, खइरपा तक हा सुघ्घर उज्जर नवा -नवा दिखत हाबे। सुरुज नरायेन सोनहा अंजोर बगरावत हे ..। सीत बरसे ले सुघ्घर लागत हे। ससन भर देखिस अपन घर ला मुचकावत । सुरहीन गाय के गोबर ले लिपाये अंगना ला, झूलत खीरा कुंदरू के बारी ला। धोवाये बरतन के मइलाहा पानी ला आरमपई म रिकोइस। कोंवर-कोंवर आमा पाना के ममहासी ला सूंघीस । कुम्हड़ा नार ला कोठा के छानी मा चड़ाइस। नहा के छाती बाँधे – बाँधे दरपन के आगू मा ठाड़े होइस तब सिरतोन उही लजागे, अपन बरन ला देख के। सांवर गोरी झक्क दमकत चेहरा । खीरा बीजा कस दाँत । उल्हा-उल्हा कोंवर सरई पत्ता कस होठ-गुलाबी । डोमी कस सुघ्घर बाल अउ कजरारी आँखी हा । जादा तारीफ झन कर फुलगजरा अपने आप के । मनेमन ओहा फुसफुसाइस । चेथी मा चपत मारिस अउ महुआ झरे कस खनखनावत हाँसे लागिस।

अब जान डारे होहु रूपषोडसी मोटियारी ला । महानदी के निरमल पानी ला कछोरा भिरके तौरे हे। परसा फूल के आगी मा तन ला सेके हे । झरत महुआ ला ओली मा झोंके हे । सरई-सइगोना, बर-पीपर के कोरा मा डंडा पचरेंगा खेलइया ये नोनी आय – फुलगजरा । रुप षोडसी मोटियारी फुलगजरा । चातर राज, बस्तर राज अउ उड़िया राज जिला धमतरी, जिला कांकेर कोंडागांव अउ जिला नवरंगपुर के लोक परब अउ संस्कृति के मिंझरा सियार आय ये गाँव – महुआटोला हा। जगन्नाथ भगवान ला पाँव परके गजामूँग खा लेथे । पचहत्तर दिन के दसेरा मनावत सल्फी लांदा ला चुहक लेथे। तब गौ लछमी ला गोबरधन खुन्दाके, सोहाई पहिराके, खिचरी खवाथे । नगरी सिहावा के कर्णेश्वर मड़ई मा डांग-डोरी ला गिदबिद-गिदबिद नचा घला लेथे। अउ भाखा ग्यान उड़िया छत्तीसगढ़ी, हिन्दी, हल्बी, भतरी सब गोठिया लेथे अपन पीरा ला बताये बर। जइसन भेष तइसन भाखा ।

" तुई तो तियार होऊन गेली से रे फुलगजरा ? पूजा पाठ करतोर काजे शीतला दाई बले जावतोर आसे।'' (तेहा तियार होगेस का फुलगजरा ? शीतलामाता मा पूजा करे बर घला जाये के हे ।)

" हँव री होऊन गेली ।'' (हँव , बस हो गेंव।)

हिरौदी, मानकुंवर, सुकारो, सुकधनिया, दुलारी आयतिन , रमौतीन, नीलम, रेखा अउ मधु जम्मो कोई आगे दोरदिर ले। जहुंरिया मन के गोठ ला सुनके किहिस। माड़ी ले लाल लुगरा, फुग्गा पोलखा, रूपियामाला, सुता ,नागमोरी करधन, अइठी, बाहा भर चुरी , माथ मा कौड़ी के मथौड़ी, मोरपंखी खोपा गजब सुघ्घर बरन। संगी मन देखते रहिगे।

दुलारी इतरावत किहिस

"आजी तो तुई हुँचो जीव च नेऊन जहुआस कसन आले!'' (तेहा तो मार डारबे आज !)

"को चो ? " (कोन ला ?)

" हुनि " (उही)।

"को हुनि "(कोन उही)।

"अऊर को मोके चलासित, गहिरा लेका के ।" (अउ कोन , मोला चलाथस । गहिरा टूरा ला कहत हँव।)

फुलगजरा अब लजागे । बातिक बाता नइ कर सकिस।

हा हा खी.. खी.. के आरो आइस। शीतला दाई के अंगना घला गमकत हावय अब।

फुलगजरा अपन टोली के मुखिया डांसर आवय। गहिरा टूरा बलराम हा मांदर बजाथे तब सब मात जाथे । आज टेक्टर मा जोरा के मांदरी नृत्य देखाये ला जावत हे गरियाबंद।

" सेठ पिला के फोन आये रिहिस। रायपुर बलात हावय। एलबम मा बुता दुहूँ कहिथे । जतका पइसा कबे ओतका दुहूँ कहत रिहिस। मेंहा तो जाहू मोला हीरोइन बनना हे। तहुं चल फुलगजरा ।"

मानकुंवर किहिस मुचकावत।

"ओ चतुरा मन के बुध मा झन आ बहिनी । न घर के रहिबे, न घाट के । सेठ-साहूकार आदिवासी, छत्तीसगढ़िया के भला करे हे. ? हुसियार फुलगजरा समझाइस। ओखर आँखी अगियावत रिहिस।

आज बलराम हा दुकान ले बिसाके लाये मोरपांख ला ओरियावत रिहिस। बबा ढेरा मा परसा डोरी ला आटत हावय। अउ बाबू हा, सोहाई के छोटकुन बंडल बनात हावय।

"बलराम तेहां का करत हस ? प्रैक्टिकल कापी देना तोर ?"

बलराम देखते रहिगे फुलगजरा ला आ अपन घर मा।

"बइहा देखते रहिबे कि कुछू बताबे।"

"सोहाई बनाथन फुलगजरा ! (सोहाई पशुधन के नरी मा बांधे जाथे जौन हा मोर पांख, परसा के डोरी ,छोटकुन रिकम-रिकम के कपड़ा ला सुघ्घर सजाके बनाथे । येहा मनमोहनी हार आय।) ये परसा के जड़ ला लान के कुचरथन। छालटी निकाल के एक-एक रेशा ला हेर के ढेरा मा आटथन। ये सादा डोरी ला हर्रा अउ चिखला माटी मा चिभोर के करिया करथन। सादा करिया डोरी मोरपांख अउ नान-नान कुटका चिकमिकी ओन्हा बाँधके बना लेथन सोहाई।"

बलराम बताइस फुलगजरा मुचकावत रिहिस ।

"हाँ, सुघ्घर बनाये हँव रिकम-रिकम के।"

"हँव ! येहा दुहर सोहाई आय । झक्क सादा । येला देबी-देवता, गोरैंया, ठाकुर देव अउ नन्दी महराज मा, डीही-डोंगर अउ दुधारू गाय में बाँधथे। पचेड़ी सोहाई आय पचरंगा । गाय भईस मा बाँधथन। ये करेलिया सोहाई पाँच लर के। ये गोल्लर अउ बड़का गर वाला गौलछमी मा बँधाथे। मंजुरहा सोहाई मा जोरदरहा मोरपंखी डारके बनाथन दुधारू गाय बर। सुघ्घर मंजूरपंखी के चांदा ला देखत रिहिस फुलगजरा हा।

गोल सादा सोहाई येला गईठा कहिथे येला बईला भईसा बछरू ला बाँधथे ।" बलराम के ददा देखाये लागिस ओरी-पारी ।

"अभी ले बनाबो बेटी ! तब देवारी बर पुर सकबो ओ ! गाँव भर के गौलछमी बर।"

"येला सोहाई काबर कहिथे बबा ? "

फुलगजरा किहिस

"सोहाई माने शोभा बढ़ानेवाला । पशुधन के शोभा मुकुट पहिरे राजा कस बाढ़ जाथे। पसीना ओगरा के हमर किसानी कारज मा पंदोली देवइया गौलछमी अउ प्रकृति ला मान देथन। सोहाई के मंजूर पांख भगवान किशन अउ सादा डोरी ला राधारानी घला कहिथे।"

बलराम बतावत रिहिस ।

फुलगजरा देखत रिहिस ओखर सांवर बरन ,फडकत भुजा, चाकर छाती, नरी मा करिया रेशम ला ।

"मोरो घर के शोभा बढ़ाबे का मोर जिनगी मा आके ? सोहाई कस सतरंगी कर देबे का ? मोर रानी .. ! मोर सोहाई।"

बलराम के आँखी गोठियाये लागिस । फुलगजरा घला हुंकारु दिस पलक झपक के। सब बिसरागे रिहिस जात धरम, रीति रिवाज, चाल चलागन , गाँव समाज ला । चन्दा-सुरुज, नरवा - डोड़गा , ताल-तरिया, सरई, महुआ रुख तक भेद नइ करिस। तब मया मा का के भेद. ?

मोर राजा.. मोर बलराम !

मोर रानी .. मोर सोहाई.. !

आँखी गोठियावत रिहिस । मुक्का भाखा, मूक सम्प्रेषण फेर सब गोठिया डारिस दुनो कोई प्रेक्टिकल कापी के बहाना। दुनो कालेज मा हावय।

चिरई-चिरगुन नानकुन रहिथे घर के शोभा बढ़ाथे । अउ उड़ियाये लागथे तब डर समा जाथे । कोनो शिकारी झपट्टा झन मारे अइसे । फुलगजरा के दाई ददा ला संसो होये लागिस। मया तो गोरसी के आगी आय उप्पर ले बुताये कस अउ तरी-तरी धधकत रहिथे। मया तो स्प्रिंग घला आय जतका दबाबे ओतकी उछलथे। .अउ कोनो उछलथे तब दुरिहा के शिकारी कइसे फाँसथे, फँसइया ला आरो नइ होवय।

येहाँ जंगलिहा गाँव गवई आय जतका सुघ्घर हावय ओतकी भयानक घला। मीठ चार तेंदू के रुखवा मा कोन कोलिहा बईठे हावय.. ? महुआ मा कोन परेत हावय ? आमा अमली के बौर मा कोन राच्छत लुकाये हे .. ? मूसली सतावर सर्पगंधा मा कोन सांप लपेटाये हे.. ? कोंन गली ले रायफल पिस्तौल लेके निकलही .. ? कोन पैडग़री मा टिफिन बम होही . ? कोन सड़क उखड़ जाही.. ? कोन रेलवाही छिही बिही हो जाही. ? कोनो नइ जाने।

फुलगजरा अउ बलराम पढ़ई मा हुशियार रिहिस । अउ गोठ बात मा सब मोहा जाही..। फेर आज तो उही मन मोहागे हावय । जल जंगल जमीन आदिवासी के हित गोठियइया मीठ लबरा मन मा। अधरतिया के वर्दी पहिन के मइलाहा सोच के दल मा वहु मिंझर गेहे। लाल सलाम के झंडा बुलंद करत हावय।

मुरलीवाला किसन कन्हैया की .जय !
राऊत भाई मन जयकारा बोलाइस।
अरा ररा रे.
घर घर दीया जलाओ संगी, आगे देवारी तिहार रे।
मोर सांहाड़ा देव बर राखे हँव, नरियर फुलगजरा हार रे।।
डुम डुम ड डंग ड डंग ड डंग ।
दफड़ा बाजा तान मारिस

राउत भाई मन दोहा पारिस अउ बजनिया मन लहस-लहस के बाजा बजाइस। टिमकी मोहरी सिंगबाजा दफड़ा गुदुम झांझ मंजीरा झुमका ।

सुघ्घर सवांगा राउत मन के । माड़ी ले पीयर धोती, लाल छिटही सलूखा , मोरपंखी के कमर बाजूबंद , मुड़ी मा खुमरी, खुमरी मा खोसाये चंदैनी गोंदा । बंगला पान के लाली ले मुँहू रंगे। अब्बड़ सुघ्घर बरन हावय गहिरा टोली के। ठोमहा भर तेल पियाईया तेन्दुसार के चिकचिकावत लउठी अउ आनी बानी के रेशम सुत चिकमिकी मा सजाये लउठी ला उप्पर उठा-उठा के नाचत हावय। गाँव के गौटिया पारा जावत हावय सोहाई बाँधे बर। पहिली गौटिया बेड़ा-बड़का मंझला, नान्हे गौटिया घर के गौलछमी ला सोहाई बाँधही ।
अरे हा ,

नेवरिया घर घला बाँधही सोहाई ला। नेवरिया-नवा-नवा आये हे ये गाँव मा। चार पाँच बच्छर होवत हे फेर अतका धाक हावय गाँव मा कि अब ये गाँव मा नेरवा गड़े सियान दाऊ के घला कुछु नइ चले । कोन जन का मोहनी मंतर जानथे ते . लइका सियान जम्मो मोहा जाथे । जवनहा मन तो अपन दाई ददा के पाँव भलुक नइ परे अउ ओखर आगू मा डंडा सरन हो जाथे। अइसे हावय नेवरिया हा। अड़गड़ा पल्ली बड़गड़ा टार अइन्ते तइन्ते हो जाही । बिचित्तर नाव हे। महुं ल लेये ला नइ आवय ओखर नाव ला। ओखरे सेती नेवरिया कहिथो सोझहा।

राउत नाचा अउ गौरी गौरा के बाजा बजनिया के पइसा नेवरिया कोती ले रहिथे। गाँव समाज वाला मन ऐखरे सेती तो मिलाय हावय अपन गाँव समाज मा। अउ सोहाई ? पइसा वाला के पाँव कोन नइ परे..?

देवारी के दिन दाऊ बेड़ा मा । जेठाऊनी के दिन बीच पारा के किसान मन घर अउ पुन्नी के दिन आबादी पारा के नान्हे किसान मजदूर के गौलछमी मा सोहाई बाँधथे।

'अभी सोहाई बाँधे के पाछू काछन निकलही जल्दी करो गहिरा भाई मन ।"
गाँव के सियान मन किहिस।
डुम डुम ड डंग ड डंग ड डंग डंग। दफड़ा बाजा ताल दिस।
अरा ररा रे.
जय महामाई रतनपुर के, अखरा के गुरु बैताल हो...।
चौसठ जोगनी पुरखा के, बइहा मा होबे सहाय हो..।।
बड़े दाऊ घर गिस सोहाई बाँधे बर सुमिरन करत राउत टोली हा। गाँववाला मन उछाह मा रिहिस अउ गौलछमी.. वहू मन अब्बड़ गमकत हावय।
अरा ररा रे. !
मन मैला तन उजला , बगुले जैसा भेष हो।
इन सब ले कागा भला, भीतर बाहर एक हो।।

गहिरा मन दोहा पारिस नाचत कूदत । अउ गाँव के निकलती मसान घाट जाए के रस्दा, जंगल ले लगे झुंझकुरहा खेत मा बसे नेवरिया घर कोती रेंगे लागिस।

चार आँखी सब ला देखत रिहिस । जँगल मा हुआ-हुआ करइया आज गाँव आये हे। करिया बरन ला हेर के उज्जर बरन धर के। राउत मन तो जइसे कौआ अउ बगुला बर नही ..ऐखरे बर दोहा पारिस। आज दुनो एक दुसर के हाथ ला धरके मसकत रिहिस। आदिवासी के हित के गोठ करइया मन, जल जँगल जमीन बर न्याय के गोठ करइया मीठलबरा मन के कथनी अउ करनी ला जान डारे रिहिस। सड़क पुल पुलिया बिजली स्कूल कालेज बर बाधा बनइया ला जान डारिस।.असल गोठ ला जान डारिस।

हमर संगठन हा पातर होवत हावय । अपन संगी संगवारी मन ला दल में जोर। पुलिस प्रशासन हमर कुनबा ला नाश करत हावय। घर लहुटे अभियान लोन वर्राटू हा कनिहा ला मुरकेट डारे हावय। लोगन मन घला अब नइ डर्रावय। नाच गान दल ले प्रमोशन होगे तुंहर । परीक्षा के घड़ी आवय । अब गाँववाला मन के बीच एसो के देवारी मा अइसे फटाका फोड़ कि रायपुर भोपाल दिल्ली अउ देश के कोना कोना तक आरो जाना चाही। इही तुंहर परीक्षा आवय । इही तुंह टास्क आवय।

अइसना तो केहे रिहिन ओखर आंका हा। ओखरे सेती अइसे बम धरे हावय लुका के, कि काछन देखइया , गोबर्धन खुन्दवइया गाँव भर दहल जाही। हाहाकार मच जाही। ये चार आँखी बलराम अउ फुलगजरा के आय।

सिरिफ बलराम अउ फुलगजरा भर नइ आये हे आज । ओखर संग आये हे सोमारू, आयतु, मड़का, श्रीनिवास, वेंकटेश, कुमारलू देवारी मनाये बर। लाखो करोड़ो इनाम हे ऐखर मन उप्पर प्रशासन डाहर ले। नेवरिया आय न नेवता देये हे, देवारी के कांदा कोचई खाये बर। देवारीच देखे बर नइ आये हे ऐमन। बम के धमाका सुने बर घला आये हावय। राउत मन नाचत हे फेर उछाह सब के चेहरा मा हावय। बुढ़वा-जवान, लइका-पिचका, जीव-जिनावर सब मगन हावय। सब गमकत हावय। फटाका बर बिटोवत लइका। मंद महुआ पीके भकवाय कका, खोड़खोड़ी खेलइया टुरा मन, ठेठरी खुरमी

बनावत दीदी मन । हाथा देवइया राउताईन मन ,पान खा के इतरावत नाती बबा..।

सब मर जाही ? सिरतोन सब मर जाही? सब जुच्छा हो जाही ? सब सुन हो जाही ? सब मरे ले आदिवासी ला अधिकार अउ न्याय मिल जाही..? ये गाँव के सिधवा मन के का कसूर ? फूल कस लइका काही नइ जानेओखर का होही. ?

फुलगजरा अउ बलराम ला ओखर नान्हेंपन सुरता आगे । जम्मो कोई नत्ता गोत्ता लरा जरा लागत हावय कका काकी दाई महतारी दीदी बहिनी । गुने लागिस । .जी काँप गे। रुआँ ठाड़े होगे।

बाजा बाजत रिहिस। राउत मन नेवरिया घर तीर अमरगे।

"फोड़ो रे फटाका मोर बैरी बड़का दाऊ के कान फूटना चाहिये। बीच बस्ती ला घला जानबा होना चाही नेवरिया घर के सोहाई बँधागे अइसे।"

नेवरिया आय। अपन अंगना मा राउत मन ला नचवाये लागिस। सौ सौ के गड्डी ल फेकिस अउ कोठार के कुंदरा कोती चल दिस । सोमारू आयतु मड़का श्री.. जम्मो के उहिन्चे डेरा रिहिस। बलराम अउ फुलगजरा घला गिस टिफिन ला धरके । दुनो के हाथ मा रिहिस टिफिन, अउ टिफिन मा रिहिस देवारी के कलेवा काँदा कोचई बरा सोहारी सलगा बरा ठेठरी खुरमी ।

राउत मन बिधुन होके नाचत हे अउ दोहा घला पारत हावय ।

अरा ररा रे.

सोहाई बनायेव अचरी पचरी, गाँठ दियो हर्रेइया रे..।
जउन सोहाई ला छाटही, ओला लपेट लागे गोर्रेइया रे.. ।।

बलराम आय दोहा परइया। वहू तो आय गहिरा टूरा। सुकधनिया (सूपा मा धान दीया अउ सोहाई मड़ाये रहिथे ।)मा माड़े धान मा गोबर के लोई ला लोटाइस अउ कोठी मा सुघ्घर छपाये हाथा के बीच मा थोपिस। सोहाई ला निकाल के करिया गाय ला सोहाई बाँधत पारिस दोहा।

फट फट फट फट ..धड़ाम। नेवरिया के दुवारी मा फटाका फूटत रिहिस फेर. सब कोई देखे लागिस कुंदरा कोती ला। जतका फटाका फूटत रिहिस ओखर ले लाख गुना जादा आरो ले कोठार के कुंदरा मा फुटिस फटाका बमफटाका। चीख चित्कार करलई के आरो आइस सोमारू आयतु श्री .सब्बो कोई के ।

ये बड़का फटाका सही जगह मा फूटे हावय आज ।

फुलगजरा मुचकावत रिहिस। ओखर चेहरा मा गरब रिहिस कर्तव्य के परीक्षा मा पास होये के। चाक्कर छाती मा गुमान रिहिस बलराम ला गाँव लहुटे के।

दुनो के नजर अटकगे करिया गाय मा। कतका सुघ्घर लागत हावय चपर-चपर दूध पियत बछरू । पीठ ला चटर-चटर चाटत गाय अउ गाय के गर मा बँधाये सुघ्घर दिखत सोहाई.। सोहाई मा साजे चाक्कर मोर पंखीअउ मोर पंखी मा सतरंगी .चाँदा । अउ चाँदा मा दुनो के ..गमकत सोहाई कस सपना। अउ सपना मा. !

चन्द्रहास साहू
आमातालाब रोड श्रद्धानगर धमतरी
जिला - धमतरी, छत्तीसगढ़
मो. : 8120578897

मनाबो देवारी के तिहार

ए दाई देख तो कलि के अतियाचार,
बरसा के पानी के नइए कहूं थाह।
मनखे बोहाथे पानी म धारो-धार,
खाय बर दू रुपया किलो चांऊर हे,नई हावय दार ।
ऊपर ले ये दगाबाज नेता अऊ सरकार,
अऊ ऊपर ले महंगाई के मार ।
ए दाई देख तो लकठियागे देवारी के तिहार ।।

रहे बर नी हावय घर अऊ दुआर,
पानी म बोहागे जम्मो खेती-खार।
गाँव-गाँव पहुंचा दे हावय बिजली सरकार,
फेर हमर जिनगी म तो छा गे अंधियार।
हमन ल हावय घर अऊ काम के दरकार,
जेन दिन मिल जाहि हमन ल रोजगार ।
ओही दिन मनाबो हमन देवारी के तिहार ।।

हे लछमी दाई तोर ले विनती करथंव बार-बार,
जब जन पर किरपा करबे अपार ।
गरीब दुखी के दुआरी म भी होय उजियार,
तोर नाम अऊ किरपा के दिया बरे दुआर-दुआर।
ए दुनिया ले खतम कर छल-कपट अतियाचार,
कलि के अंत कर खतम कर पापाचार।
जम्मो परानी मिल के मनाबो देवारी के तिहार ।।

सुधा देवांगन 'शुचि'
जिला - रायगढ़, छत्तीसगढ़

छत्तीसगढ़ी में समय सारिणी

1:- भिनसरहा- लगभग 4 बजे सुबह से 5 बजे तक।
2:- झुलझुलहा- सुबह 5 बजे से लगभग 5:30 बजे तक।
3:- पँगपँगहा- सुबह सूर्योदय की लालिमा तक।
4:- बिहनिया- सूर्योदय
5:- गरुवा ढिलाती- लगभग 7 से 8 बजे तक सुबह।
5:- मंझनिया- दोपहर 12 बजे से लगभग 2 बजे तक।
6:- बेरा ढरकत-2:30 से लगभग 4 बजे तक।
7:- संझा-4 बजे से 5:- 30 लगभग।
8:- बेरा बुड़ती- सूर्यास्त समय(यही समय लगभग आगी बारने का बेरा कहलाता है। (इसे मुंधियार भी कहते हैं)
9:- बियारी के बेरा- रात में खाने का समय।
10:- दु पेटिया बियारी- गर्भवती महिलाओं के खाने का समय जो प्रायः जल्दी होता था। घर के सियान के खा लेने के बाद गर्भवती महिलाओं को जल्दी खाने को कहा जाता है। चूंकि गर्भ में एक पेट(बच्चा) और होता है इसलिए दु पेटिया कहा जाता है।
11:- अधरतिया- रात्रि 12 बजे से आगे।
12:- सुकवा पहाती- भिनसरहा से थोड़ा पहले (शुक्र तारा इसे हिंदी में भोर का तारा भी कहते हैं। इसके बाद बेरा झुलझुलहा होने लगता है। कम से कम बच्चों को बताएं।

करवा चउथ चौपाई

कातिक चउथ महत्तम भारी, करय उपास सुहागन नारी।
कातिक मास कृष्ण चउथ मा, धूप दीप म सजे हे थारी।

मांगय वर करवा माता ले, जप-तप करके भाग जगा ले ।
जावर- जोड़ी बनय रहय माँ, भरय रहय सिंदूर मांग मा।

मांग मोती म माथा दमके,टिकुली बन सजना हा चमके ।
लाली लुगरा लाली चूरी, महुर मेहंदी लाली चुनरी ।

छनकय पइरी,बिछिया अंगरी, नाक नथुनिया हार गला री ।
साथ विधाता सात जनम के ,बनय रहय जोड़ी ह धरम के।

शिव पार्वती पूजा करथें, कार्तिकेय गणपति ल भजथें।
लड्डू भोग भगवान चढ़ाथें, करवा दान ह भाग बनाथे।

चंद्र देव ल अरघ चढ़ाके, चलनी मा चंदा ला झांके।
चंदा हा चंदा ला ताके, खुश रहिथे अशीष ला पाके।

मया पिरित मा चहकय डेरा ,रहय खुशी के हरदम फेरा।
बरय खुशी अउ सुख के जोती, मया पिरित बगरे सब कोती ।

सुधा देवांगन 'शुचि'
जिला - रायगढ़, छत्तीसगढ़

सुरुहोत्ती_ईसर - गौरा जगार

गौरी - गउरा या ईसर (शंभु) गउरा। लोगन जइसन देखथे तइसन लिखथें अउ वइसने पढ़थें, समझथें। अब बारा आना मिलावट अउ चार आना निमगा रहिगेहे। बिस्कुटक (विज्ञापन) के जमाना बहुतरे फरत फूलत हे । लोगन पसंद घलोक करत हे आज शंभु (ईसर) गउरा परब गौरी -गौरा बनके रहिगे हे , जबकि गौरा -गौरी एकेच आय।

सुरुहोत्ती के तको मायने हे वो दिन ले काय -काय काम - बुता के सुरुवात हो जाथे समझेल परही। प्रायः गांव म ST,SC,OBC, मनहर जादा रहिथे जेन मन मूल संसकिरति के ऊंचहा झंडा फहरईया माटी ले जूरे मनखे आय। माटी के काया, माटी म हे मिल जाना।' सिरिसटी के अंग _धरती, पानी, पवन, आगी, अगास संग जीव- जंतु, पशु - पंछी जनावर ला जय जोहार करे के परब आय सुरुहोत्ती। फेर अब काहे घर मा नाग देव भिंभोरा पूजे ला जाए जइसन होगे हे ।'

सुरुहोत्ती तिहार मा बिहाव संसकार अउ जिनगी के सुग्घर गायन हे। हमर गंवई गांव के देवी - देवतन ल सुघ्घर लोक गीत के माध्यम ले जय जोहार करे जाथे। ये पुरातन संसकीरति ला छेत्र के गोंड जनजाति समुदाय म बिसेस रूप ले देखे जा सकत हे। एमा घर परिवार माई -पिल्ला के जिनगी के समृद्धि के सुग्घर वरनन अउ बरनन हे। एक परकार के समाजिक परिवेश अउ बिहाव 'लोक गाथा' के अनुखा नजारा देखे ला मिलथे।

ईसर- गउरा ल माटी ले गढ़ के बनाय के नेग -दस्तुर हे, आजकल लोगन रेडिमेंट के ला बीसा के तको ले आथे।

आवव ये परब के महिमा ला जानन_ कातिक महीना के अमावस्या तिथि के सात -पांच दिन पहिली गौरा चौंरा मा फूल कुचरे के नेंग दस्तूर हे जेला गांव के महिला, बेटी माईमन करथें। सुरुहोत्ती के दिन सबले पहिली एक निश्चित ठीहा ले माटी लाय जाथें जेन बेरा महिला , मोटियारी मन लोक गीत गाथें -

(1) ढेला ढेलवानी, मोर जऊंहर खेती, ढेला ला मारे कुदार....।

_ये चुलमाटी गीत आय' गीत मा किसान ल समझाए गेहें कि किसानी कोनो सहज काम - बुता नोहे। माटी ल कोड़के, फोरके उपजाऊ बनाय ला परथे तभे पईदावार बने हो सकत हे। माने खेती किसानी करना जऊंहर बुता आय।

(2) जोहर -2 मोर ठाकुर देवता, सेवर लागवँ मय तोर....
हंसा चुगथे मूंगा मोती फूले वो चना के दार...।

-ये गीत मा ईसर -गउरा ला माध्यम बनाके सरधा - भकती भाव ले गांव के परमुख देवी - देवतामन ला जोहारत नेवता पठोय के भाव परगट करे गेहे। देवता के संगे - संग,गांव शहर ला जगाए के उदिम करे जावत हे। इहां एक पंछी हँस जेकर खान - पान के वरनन मिलत हे। देवतन के संग चिरई -चिरगुन ला जोरे गेहे।

(3) एक पतरी रैनी -भैंनी राय रतन वो..।
गउरा देवी तोरे सीतल छाय , चऊंक ,चंदन, पिरोढ़ी,....

_ ये गीत मा हर शब्द के महत्ता परगट होय हे । इहाँ महिलामन के गौरा दाई के परती परेम देखव अउ गीत के अरथ समझव आत्मवंदित संसकारित गीत रैनी -भैंनी माई के सखी- सहेली हे जो रतन (नवरत्न)के समान हे ये बिहाव मा गौरा महारानी के समान हे, जेन चऊंकी, चंदन,पीढ़ा संग सनमानित हे। पतरी (गोल पात्र) जेन समाज के परमुख अंग आय। जइसे - रोटी- बेटी, गोंटी, लेटा - बेटा, फेंटा। ये गीत म नारी सनमान के भाव जगे हे नारी समाज मा सबले बड़े धन के समान हे।

(4) ईसर राजा के रचे हों बिहाव,,,, गौरा बिहाय चले जाए..।

-ये गीत के माध्यम ले झलकत हे कि बर - बिहाव के रचना होगे हे ,ईसर राजा सज -संवर के अपन गौरा रानी संग बिहाव करे बर जावत हे। संग मा संगी- साथीमन तको गगन - मंगन होके गमकत नाचत कूदत बरतिया बनके जावत हे।

(5) ओगरी - ओगरी नव से ओगरी..। जहां डरइया डारे...।।

ये गीत ह संदेश देवत भाव परगट करत हे कि गांव मा बरतिया ओरी - पारी करके आगेहे। हर गांव के अपन बेवसथा होथे बाहिर ले आय उपद्रवी, बेड़जत्ता मनला डारना। ये काम सियान मन करथे। जब ईसर -गउरा के आगु मा काँसा चघथे त पेरा डोरी ले सांटा मारे जाथे। हाथ- पाँव मा तेल बाती ले सुमतेला देय जाथे, आखिर म हुम - धूप देवाके शांत करे जाथें।

(6) लाले -2 परसा लाले हे खम्हार,,,। लाले हे ईसर राजा घोड़वा सवार...।।

ये गीत मा ईसर राजा के बिरता रूपी सिंगार के बखान करे गेहे। जइसे परसा,खम्हार के फूल लाल रइथे वइसने ईसर देव लाल वेशभूषा बनाले हे बईला ला छोड़के घोड़ा मा सवार होगे हे। संग मा भरे पुरे सम्पत्ति के बखान गीत के माध्यम ले होय हे।

(7) देतो दाई -2 दही अउ बासी,,,। अखरा खेलन बर जाहूँ वो दीदी...।।

- येहर मउर सोपनी के बेरा के गीत आय जेमा अपन सब्बो रिसतेदार मनला ओरिया - ओरिया के आसीरबाद मांगत हे। दही बासी गांव के लोकपिरिय भोजन आय जेकर ले सरीर पुष्ट होथे। अखरा पाली (अखाड़ा) ताकत आजमाए के ठीहा आय। एक परकार के फौजी बनेके तइयारी गीत आय।

(8) एक पतरी चढ़ाएन गउरा बेलवा वो बेलवाती,
आमच आमा फूले गउरा
मांझम वो चौंरासी
रोनिया के भोंनिया.....।।

- ये गीत मा परकिरती संग मानुष के सुघ्घर मिलाप करे गेहे। गोल पतरी, तीन पाना वाला बेल के, आमा के डंगाली म जोत्था - जोत्था फूलना, सुख समृद्धि पाय के कामना करना। मांझा -सुभित्ता जगा। चौंरासी गढ़ म जनम धरना या 84 देवी- देवता के आसिरवाद पाना, चौरसिया होगेस रे...(एक कहावत) रोनियां- सीत मउसम ला इंगित करत हे। ये ढंग ले एमा भूत,भविष्य, वर्तमान लोक गायन म समाहित होगे हे।

(9) काकर करसा रिगबिग -सिगबिग...।
ईसर के करसा सिंहासन रे बाबू...। भाई वाले.... बिन भाई वाले.....।।

- करसा समृद्धि के परतिक आय, करसा बड़े होथे अउ कलश छोटे। एमा ईसर गउरा ला केंद्रीय करत भाई - बहिनी के परेम सुख- दुख के बात बताए गेहे। भाई वाले अउ बिना भाई वाले बहिनीमन कइसे करसा बोहथे। निराश बहिनी ल बार - बार ईसर - गउरा कोती ईसारा करत (बिस्वास)ढांढस बंधाए गेहे।

ये ढंग ले सुरुहोती मा लइका-सियान, बुढ़वा -जवान, माई -पिल्ला के सुख- दुख के गाथा समा गेहे।

अइसने ईसर- गउरा ले संबंधित 20-25 सो ठक गाना मिल जाहि जेमा जिनगी के सार तत्व छुपे हे। निश्चित रूप ले कही सकथन कि सुरुहोत्ती मा मानवीय संवेदना, पराकिरतिक, ग्रामीण सांसकिरतिक लोक जीवन के सुघरई के सुग्घर खजाना हे।

मदन मंडावी
ढारा, डोंगरगढ़, छत्तीसगढ़

छत्तीसगढ़ के खेल

हमर छत्तीसगढ़ के खेल मन भी निराला होथे,
जैसन इहां के लोग लईका मन सादा हांवे,
वइसनहे ऊंखर खेल कूद राइथे,
जेन कम जीनिस मा बिना खटकरम के खेले जा सकथे ।

इहाँ मैं छत्तीसगढ़ के थोड़कुन प्रमुख खेल के बारे में बतावत हंव ---

1 - अटकन बटकन
एमा लइका मन गोल घेरा बना के , बइठ जाथें अऊ अपन दुनों हथेली ला भूइंया मा, मढ़ा के ,एक ठन अंगठी ले जम्मो झन के अंगठी ला छुअत जाथें, अउ संग मा गावत जाथें

अटकन बटकन दही चटाकन, लउहा लाटा बन में काँटा।
तुहुर-तुहुर पानी गिरय, सावन म करेला फूटय।
चल-चल बेटी गंगा जाबो, गंगा ले गोदावरी।
पाका-पाका बेल खाबो, बेल के डार टूटगे।
भरे कटोरा फूटगे ।।

अऊ संगवारी मन तको गात जाथें –
अतल के रोटी पतल के धान, एकर लंगड़ी धर बुची कान ।
ए गीत के बाद ऊमन एक-दूसर के कान ला धरके गाथें- केऊ-मेऊ मेकरा के जाला, फूटगे कोहनी के आला
अऊ जम्मो झन पाछु कोती उलंड जाथें।

2 - फुगड़ी
ज्यादा करके ऐला नोनी मन खेलथें,
खेलईया नोनी मन उन्खरु बैठ जाथें अऊ लचक लचक के अपन तरपौंरी ला आगू पाछु चलात जाथें,
जेखर सांस भर जाथे,या पांव रुक गे तो ओ हर खेल ले बाहिर हो जाथे ।
फुगड़ी खेलत खेलत नोनी मन ये गीत ला गावत जाथें:-

गोबर दे बछरु गोबर दे, चारों खूंटा लीपन दे।*
अपन खाथे गूदा-गूदा, मोला देथे बीजा।
ए बीजा ला का करबो, रहि जाबो तीजा।
तीजा के बिहान दिन, सरि-सरि लुगरा।
हेर दे भौजी कपाट के खीला,
केंव-केंव नरियाही मंजूर के पीला ।।
पाके बुंदलिया राजा घर के पुतरी,
खेलन दे फुगरी, फुगरी के फुन -फुन।।

बेल आई बेल आई कोन्हा म छबील बाई ।
मारेन मुटका, हेराबोन तल, पतरंगी छूटगे, छुवैया गड़ी मोर ।
फुगड़ी खेले मा जेखर हाथ भुइंया मा छुआ जाथे, या ओ हर गिर जाथे तो ओला बाकि संगवारी मन खिजावत गाथें:-
भरे कराही, भर गे, हरही टूरी हटगे, फुगरी रे फुन-फुन-फुन।

3- ख़ुडुवा (कबड्डी)
कबड्डी सहीं एमा दु दल बना लेथें,
दू झिन लइका मन अगुवा बन के अपन दल के खेलैया लइका मन के जोड़ी बनावत जाथें,
बारी बारी एक दुसर के पाली मा जा के छुए के कोशिश करथें, जेन छुआ जाथे तेला बाहिर निकले बर पड़थे।
ऐला खेलत समय भी लइका मन ए गीत गावत जाथें:--

चल कबड्डी आवन दे, तबला बजाना दे ।।*
खुडुवा डुडुवा नागर के हरी
भेलवा उधवा, सुकुवा पहाती
मारे मुक्का फूटे बेल
तीन टुटुवा तिल्ली तेल

4 - भौंरा बांटी
लकड़ी के बने भौंरा मा डोरी फंसा के ओला भुइंया मा पटक के घुमाथें, जेखर भौंरा ज्यादा बेर ले चक्कर खाथे,
तेन जीत जाथे, कांच के बने गोल गोल बांटी ला भुइंया मा बगरा के एक बड़े बांटी ले बाकि मा निशाना लगाथें अऊ एक छोटकुन खचवा मा तकों डारथें।
ए हर छोकरा जात मन के प्रिय खेल हावे।

5 – लंगड़ी

ए खेल मा दाम देवैया अपन एक गोड़ मा कूद कूद के अपन संगवारी मन ला छुए के कोशिश करथे,
जेन छुआ जाथे फेर ओला दाम देहे बर पड़थे ।

6 – कोठी ढाबा (चाल गोटी)

लकड़ी के खांचा मा इमली के बीजा भर के खेलथें ।

7 – डंडा पिचरंगा

खेलईया लइका मन अपन हाथ मा धरे डंडा ले,
दाम देवैया के डंडा ला खींचे अऊ घुंचाए के कोशिश करथें,
जेन लइका छुआ जाथे फेर ओ हर दाम देथे ।

8 – गिल्ली डंडा

एक ठन खचवा मा गिल्ली ला धर के ,डंडा ले जोरहा मारथें,
जेखर गिल्ली दूरीहा तक
जाथे ओ हर जीत जाथे ।

9 – पिट्ठुल

दू दल बना के ,एक दल हर खपरा के 7 टुकड़ा ला एक के ऊपर एक जमाथें,
अऊ दुसर दल के संगवारी मन एक गेंद ले ओला मार के गिराथें,
ऊमन के जमावत ले ऊंखर पीठ मा घलोक गेंद ले मारथें।

10 – धंसउला

गीला माटी, चिखला मा एक ठन डंडा ला फेंक फेंक के धंसाथें।
एखरे संगे संग ,नदी पहाड़ , गेंड़ी, सांकली , तीरी पांसा, बिल्लस,घोड़ा बादाम छाई, गोंटा,
जैसे कतको किसीम के खेल छत्तीसगढ़ मा खेले जाथें,
जेखर ले लइका मन मा चतुरई अऊ बल बुद्धि के विकास होथे ,
हमन ला अपन भुइंया के खेल ला बढ़ावा देना चाही ,
जेखर ले हमर परंपरा आऊ संस्कृति ला भी बढ़ावा मिलही।

अनामिका शर्मा 'शशि'
जिला - रायपुर, छत्तीसगढ़

VIMTARA

VIMTARA

VIMTARA

VIMTARA
हमर बिन्हारी साहित्य समिति छत्तीसगढ़

VIMTARA
हमर बिन्हारी साहित्य समिति छत्तीसगढ़